

# UP Board Class 12 Hindi 302 (DH) Question Paper with Solutions

Time Allowed :3 Hour 15 Minutes | Maximum Marks :100 | Total Questions :14

## सामान्य निर्देश

1. प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।
2. इस प्रश्न-पत्र में दो खंड हैं। दोनों खंडों के सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

## 1 (खंड क)

1.(क) 'मेरी असफलताएँ' किस विधा की रचना है ?

- (अ) कहानी
- (ब) आत्मकथा
- (स) डायरी
- (द) जीवनी

**Correct Answer :** (ब) आत्मकथा

उत्तर : 'मेरी असफलताएँ' आत्मकथा विधा की रचना है। आत्मकथा वह साहित्यिक विधा है जिसमें लेखक अपने जीवन के अनुभवों, संघर्षों और विचारों का स्वयं वर्णन करता है। इस रचना में लेखक ने अपनी असफलताओं, उनके कारणों और उनसे प्राप्त शिक्षाओं का आत्मविश्लेषण किया है।

### Quick Tip

आत्मकथा में लेखक स्वयं अपने जीवन के महत्वपूर्ण प्रसंगों, संघर्षों और उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत करता है।

1.(ख) 'धुमकड़ शास्त्र' के लेखक हैं :

- (i) राहुल सांकृत्यायन
- (ii) विद्यानिवास मिश्र
- (iii) प्रेमचन्द
- (iv) नागार्जुन

**Correct Answer :** (i) राहुल सांकृत्यायन

उत्तर : 'घुमक्कड़ शास्त्र' के लेखक राहुल सांकृत्यायन हैं। वे हिंदी साहित्य के प्रमुख यात्रा साहित्यकारों में से एक थे। यह ग्रंथ मानव जीवन में यात्रा और अनुभवों की महत्ता पर केंद्रित है और इसमें उन्होंने एक घुमक्कड़ के जीवन और दर्शन को विस्तार से समझाया है।

**Quick Tip**

राहुल सांकृत्यायन को 'यात्रा साहित्य का जनक' कहा जाता है। उन्होंने हिंदी में कई महत्वपूर्ण यात्रा-वृत्तांत लिखे हैं।

1.(ग) निम्नलिखित में से कौन-सा उपन्यास जैनेंद्र द्वारा लिखित है ?

- (i) इरावती
- (ii) ऋतुचक्र
- (iii) सुनीता
- (iv) निर्मला

**Correct Answer :** (iii) सुनीता

उत्तर : 'सुनीता' उपन्यास जैनेंद्र कुमार द्वारा लिखित है। यह उपन्यास प्रेम और सामाजिक मूल्यों के अंतर्द्वंद्व को दर्शाता है। जैनेंद्र हिंदी साहित्य में मनोवैज्ञानिक उपन्यास लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं।

**Quick Tip**

जैनेंद्र कुमार ने हिंदी साहित्य में 'मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद' की धारा को आगे बढ़ाया।

1.(घ) 'ब्राह्मण' पत्र का संपादन किया था :

- (i) भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने
- (ii) 'प्रेमघन' ने
- (iii) प्रतापनारायण मिश्र ने
- (iv) बालकृष्ण भट्ट ने

**Correct Answer :** (iv) बालकृष्ण भट्ट ने

उत्तर : 'ब्राह्मण' पत्र का संपादन बालकृष्ण भट्ट ने किया था। यह पत्र हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण था और समाज में सुधारवादी विचारों को बढ़ावा देने के लिए जाना जाता था।

**Quick Tip**

बालकृष्ण भट्ट हिंदी पत्रकारिता के प्रमुख हस्ताक्षरों में से एक थे और उन्होंने हिंदी गद्य को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1.(ङ) 'चिंतामणि' रचना के लेखक हैं :

- (i) महावीर प्रसाद द्विवेदी
- (ii) रामचंद्र शुक्ल
- (iii) हजारी प्रसाद द्विवेदी
- (iv) डॉ. नगेन्द्र

**Correct Answer :** (ii) रामचंद्र शुक्ल

उत्तर : 'चिंतामणि' के लेखक रामचंद्र शुक्ल हैं । यह ग्रंथ हिंदी आलोचना साहित्य का एक प्रमुख स्तंभ है और इसमें हिंदी साहित्य, दर्शन और आलोचना से संबंधित विचार प्रस्तुत किए गए हैं ।

Quick Tip

रामचंद्र शुक्ल को हिंदी आलोचना का जनक कहा जाता है । उनकी रचना 'चिंतामणि' साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है ।

2.(क) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की रचना है :

- (i) कामायनी
- (ii) वैदेही वनवास
- (iii) कश्मीर सुषमा
- (iv) प्रेम माधुरी

**Correct Answer :** (ii) वैदेही वनवास

उत्तर : 'वैदेही वनवास' अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की प्रसिद्ध रचना है । यह हिंदी काव्य में विशेष स्थान रखती है और इसका भावनात्मक एवं साहित्यिक महत्व अत्यधिक है ।

Quick Tip

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' खड़ी बोली हिंदी कविता के प्रारंभिक कवियों में से एक थे ।

2.(ख) 'सरोज-स्मृति' कविता के रचनाकार हैं :

- (i) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
- (ii) जयशंकर प्रसाद
- (iii) सुमित्रानंदन पंत
- (iv) महादेवी वर्मा

**Correct Answer :** (i) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

उत्तर : 'सरोज-स्मृति' सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता है । यह कविता उनकी पुत्री सरोज की असामयिक मृत्यु पर लिखी गई थी और इसमें गहरी करुणा और संवेदनशीलता प्रकट होती है ।

Quick Tip

'सरोज-स्मृति' कविता हिंदी साहित्य की आत्मकथात्मक करुणा-काव्य की महत्वपूर्ण रचनाओं में से एक मानी जाती है ।

2.(ग) 'उपमान मैले हो गए हैं' किसकी काव्यपंक्ति है ?

- (i) त्रिलोचन शास्त्री
- (ii) नागार्जुन
- (iii) मुक्तिबोध
- (iv) अज्ञेय

**Correct Answer :** (iv) अज्ञेय

उत्तर : 'उपमान मैले हो गए हैं' प्रसिद्ध कवि अज्ञेय की काव्यपंक्ति है । यह प्रयोगवादी कविता की एक महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति मानी जाती है ।

Quick Tip

अज्ञेय हिंदी में प्रयोगवाद और नई कविता के प्रमुख कवियों में से एक माने जाते हैं ।

2.(घ) 'एकांतवासी योगी' किसकी रचना है ?

- (i) मैथिलीशरण गुप्त
- (ii) श्रीधर पाठक
- (iii) बालमुकुंद गुप्त
- (iv) भारतेन्दु हरिश्चंद्र

**Correct Answer :** (ii) श्रीधर पाठक

उत्तर : 'एकांतवासी योगी' श्रीधर पाठक की रचना है । वे हिंदी में राष्ट्रीयता और भावुकता से युक्त कविताएँ लिखने के लिए प्रसिद्ध हैं ।

Quick Tip

श्रीधर पाठक हिंदी में ब्रज और खड़ी बोली के संक्रमणकालीन कवियों में माने जाते हैं ।

2.(ङ) हिंदी काव्य के किस कालखण्ड को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' कहा गया है ?

- (i) प्रगतिवाद
- (ii) छायावाद
- (iii) प्रयोगवाद
- (iv) नई कविता

**Correct Answer :** (iii) प्रयोगवाद

उत्तर : हिंदी काव्य के प्रयोगवादी युग को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' कहा गया है। इस काल में कविता में नए प्रयोग हुए, जिसमें पुराने परंपरागत प्रतीकों और स्थूल उपमानों को चुनौती दी गई।

**Quick Tip**

प्रयोगवादी कविता का उद्देश्य नए विचारों और संवेदनाओं को व्यक्त करने के लिए भाषा और शैली में नवीनता लाना था।

3. दिए गए गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : साहित्य, कला, नृत्य, गीत, आमोद-प्रमोद अनेक रूपों में राष्ट्रीय जन अपने-अपने मानसिक भावों को प्रकट करते हैं। आत्मा का जो विश्वव्यापी आनंद भाव है वह इन विविध रूपों में साकार होता है। यद्यपि बाह्य रूप की दृष्टि से संस्कृति के ये बाहरी लक्षण अनेक दिखायी पड़ते हैं, किंतु आंतरिक आनंद की दृष्टि से उनमें एकसूत्रता है। जो व्यक्ति सहृदय है, वह प्रत्येक संस्कृति के आनंद पक्ष को स्वीकार करता है और उससे आनंदित होता है। इस प्रकार की उदार भावना ही विविध जनों से बने हुए राष्ट्र के लिए स्वास्थ्यकर है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश भारतीय संस्कृति और कला की व्यापकता को दर्शाने वाला है। इसमें बताया गया है कि विभिन्न कलाओं और साहित्य के माध्यम से राष्ट्र के लोग अपने भावों को अभिव्यक्त करते हैं। यह विचार राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक एकता पर आधारित है। इस संदर्भ में, साहित्य, कला और नृत्य आदि के माध्यम से आत्मा की अभिव्यक्ति को समझाया गया है।

**Quick Tip**

संदर्भ लिखते समय गद्यांश के मुख्य विचार और उसका उद्देश्य स्पष्ट करना आवश्यक होता है।

(ख) राष्ट्रीय जन अपने मानसिक भावों को किन रूपों में प्रकट करते हैं ?

उत्तर : राष्ट्रीय जन अपने मानसिक भावों को साहित्य, कला, नृत्य, गीत और आमोद-प्रमोद के विभिन्न रूपों में प्रकट करते हैं। ये सभी माध्यम आत्मा के आनंद को व्यक्त करने और संस्कृति को संजोने में सहायक होते हैं। इनके माध्यम से व्यक्ति अपनी भावनाओं को व्यक्त करता है और समाज में एकता एवं सौहार्द की भावना का विकास होता है।

### Quick Tip

साहित्य, कला और संगीत समाज की संस्कृति को संजोने और प्रसारित करने के प्रभावी साधन होते हैं।

### (ग) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: गद्यांश में रेखांकित अंश "आत्मा का जो विश्वव्यापी आनंद भाव है वह इन विविध रूपों में साकार होता है" का तात्पर्य यह है कि मनुष्य की आत्मा में जो आनंद और सौंदर्य की भावना निहित है, वह साहित्य, कला, नृत्य, गीत और अन्य सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से प्रकट होती है। इन सभी रूपों में अलग-अलग विशेषताएँ होती हुए भी इनका मूल भाव एक ही होता है—आत्मा का आनंद। प्रत्येक व्यक्ति अपने संस्कार और रुचि के अनुसार इन विभिन्न कलाओं के माध्यम से आनंद प्राप्त करता है। यह आनंद व्यक्तिगत न होकर सार्वभौमिक होता है, जो पूरे समाज और राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने का कार्य करता है।

### Quick Tip

व्याख्या करते समय गद्यांश के मूल विचार को ध्यान में रखते हुए उसका सरल और स्पष्ट अर्थ प्रस्तुत करना चाहिए।

### (घ) आंतरिक आनंद की दृष्टि से किनमें एकसूत्रता है ?

उत्तर: आंतरिक आनंद की दृष्टि से साहित्य, कला, नृत्य, गीत और आमोद-प्रमोद के विविध रूपों में एकसूत्रता होती है। यद्यपि बाह्य रूप से ये सभी अलग-अलग प्रतीत होते हैं, किंतु इनका मूल उद्देश्य आत्मा के आनंद को व्यक्त करना है। सभी कलाएँ और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ आनंद और सौंदर्य की भावना को उजागर करती हैं तथा मनुष्य के भीतर गहरे आध्यात्मिक संतोष का संचार करती हैं।

### Quick Tip

सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों की विविधता के बावजूद उनमें निहित भावनात्मक एकता, समाज और राष्ट्र को जोड़ने का कार्य करती है।

### (ङ) कौन-सी भावना राष्ट्र के लिए स्वास्थ्यकर है ?

उत्तर: राष्ट्र के लिए सबसे स्वास्थ्यकर भावना "सभी संस्कृतियों की सौंदर्य और आनंद पक्ष को स्वीकार करने की उदार भावना" है। जो व्यक्ति सहृदय होता है, वह प्रत्येक संस्कृति के सुंदर पक्ष को स्वीकार करता है और उससे आनंद प्राप्त करता है। इस प्रकार की सहिष्णु और उदार भावना बहु-सांस्कृतिक समाज में सामंजस्य और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देती है। यदि लोग केवल अपनी संस्कृति को श्रेष्ठ मानें और अन्य संस्कृतियों को महत्व न दें, तो समाज में वैमनस्य उत्पन्न हो सकता है।

### Quick Tip

सांस्कृतिक सहिष्णुता और विविधता को अपनाने से समाज में सामंजस्य और शांति बनी रहती है।

### अथवा

पुष्पित अशोक को देखकर मेरा मन उदास हो जाता है। इसलिए नहीं कि सुंदर वस्तुओं को हतभाग्य समझने में मुझे कोई विशेष रस मिलता है। कुछ लोगों को मिलता है। वे बहुत दूरदर्शी होते हैं। जो भी सामने पड़ गया, उसके जीवन के अंतिम मुहूर्त तक का हिसाब वे लगा लेते हैं। मेरी दृष्टि उतनी दूर तक नहीं जाती। फिर भी मेरा मन इस फूल को देखकर उदास हो जाता है। असली कारण तो मेरे अंतर्दामी ही जानते होंगे, कुछ थोड़ा-सा मैं भी अनुमान कर सकता हूँ।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर : यह गद्यांश "पुष्पित अशोक" पाठ से लिया गया है, जिसमें लेखक ने प्रकृति के सौंदर्य और मनुष्य की भावनाओं के बीच संबंध को दर्शाया है। लेखक को पुष्पित अशोक को देखकर अनायास ही उदासी महसूस होती है, और वह इस भावना के पीछे के कारणों की तलाश करता है।

### Quick Tip

संदर्भ लिखते समय गद्यांश के पाठ का नाम और उसकी मुख्य भावना को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना आवश्यक होता है।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : गद्यांश में रेखांकित अंश "वे बहुत दूरदर्शी होते हैं। जो भी सामने पड़ गया, उसके जीवन के अंतिम मुहूर्त तक का हिसाब वे लगा लेते हैं।" का अर्थ यह है कि कुछ लोग अत्यधिक दूरदर्शी होते हैं और किसी भी वस्तु या व्यक्ति के भविष्य का अनुमान लगाने लगते हैं। वे केवल वर्तमान को नहीं देखते, बल्कि उसके अंतिम परिणाम की कल्पना करके भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करते हैं। लेखक का कहना है कि वह स्वयं इतना दूरदर्शी नहीं है, फिर भी पुष्पित अशोक को देखकर अनायास ही उसके मन में उदासी उत्पन्न होती है।

### Quick Tip

व्याख्या करते समय मूल विचार को सरल भाषा में प्रस्तुत करें और उसका व्यापक अर्थ समझाने का प्रयास करें।

(ग) गद्यांश के लेखक ने स्वयं के बारे में क्या कहा है ?

उत्तर : गद्यांश के लेखक ने स्वयं के बारे में कहा है कि वह अत्यधिक दूरदर्शी नहीं है और भविष्य की गहरी गणना करने में सक्षम नहीं है। वह यह भी स्वीकार करता है कि पुष्पित अशोक को देखकर उसके मन में जो उदासी उत्पन्न होती है, उसके पीछे का वास्तविक कारण तो केवल ईश्वर ही जानता है। हालांकि, वह स्वयं भी इसका अनुमान लगाने का प्रयास करता है। लेखक अपने मन की संवेदनशीलता और प्रकृति के प्रति उसकी प्रतिक्रिया को लेकर विचारशील है।

Quick Tip

लेखक के आत्मविश्लेषण को समझने के लिए उनकी मनःस्थिति और संवेदनशीलता पर ध्यान देना आवश्यक होता है।

(घ) प्रस्तुत गद्यांश का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत गद्यांश का उद्देश्य मनुष्य की संवेदनशीलता और प्रकृति के प्रति उसकी आत्मीयता को प्रकट करना है। लेखक यह दर्शाना चाहता है कि कभी-कभी सुंदरता भी मन में गहरी भावनाएँ उत्पन्न कर सकती है। यह गद्यांश यह भी दर्शाता है कि व्यक्ति की भावनाएँ हमेशा तर्क और विश्लेषण पर आधारित नहीं होतीं, बल्कि वे मन के गहरे अनुभवों और संवेदनाओं से जुड़ी होती हैं।

Quick Tip

साहित्यिक रचनाओं में भावनाओं और संवेदनाओं की गहराई को समझना आवश्यक होता है।

(ङ) 'अंतर्यामी' और 'दूरदर्शी' शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर :

- **अंतर्यामी** : 'अंतर्यामी' का अर्थ है वह जो सबके मन की बात जानता हो। यह शब्द आमतौर पर ईश्वर के लिए प्रयुक्त किया जाता है, क्योंकि वह सबकी अंतःस्थिति को जानने वाला माना जाता है।
- **दूरदर्शी** : 'दूरदर्शी' का अर्थ है वह व्यक्ति जो भविष्य की संभावनाओं को पहले से समझने और आंकलन करने की क्षमता रखता हो। यह शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता है, जो आने वाली परिस्थितियों का पूर्वानुमान लगाकर निर्णय लेते हैं।

Quick Tip

शब्दों के अर्थ लिखते समय उनके भावार्थ और उनके प्रयोग को ध्यान में रखना आवश्यक होता है।

4. दिए गए पद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :  
विस्तृत नभ का कोई कोना,

मेरा न कभी अपना होना,  
परिचय इतना इतिहास यही  
उमड़ी कल थी मिट आज चली !

(क) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

उत्तर : यह पद्यांश प्रसिद्ध हिंदी कवयित्री महादेवी वर्मा की रचना से लिया गया है । इसमें कवयित्री ने जीवन की क्षणभंगुरता और निस्सारता का मार्मिक चित्रण किया है । इस कविता में वे अपने अस्तित्व को विस्तृत नभ के कोने के समान मानती हैं, जिसका कोई निश्चित स्थान या अधिकार नहीं होता ।

Quick Tip

संदर्भ लिखते समय कविता के मूल विचार और उसके कवि या कवयित्री का नाम अवश्य उल्लेख करें ।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर : रेखांकित अंश "उमड़ी कल थी मिट आज चली !" का अर्थ यह है कि जीवन का अस्तित्व क्षणिक है, जो कल प्रकट हुआ था, वह आज समाप्त हो गया । यहाँ कवयित्री ने मानव जीवन की अस्थिरता को दर्शाया है । जैसे वर्षा की उमड़ती घटाएँ आती हैं और फिर लुप्त हो जाती हैं, वैसे ही जीवन भी एक क्षण के लिए खिलता है और फिर समाप्त हो जाता है । इस पंक्ति में जीवन की नश्वरता का सुंदर चित्रण किया गया है ।

Quick Tip

काव्य पंक्तियों की व्याख्या करते समय उनके भावार्थ और गहरे अर्थ को स्पष्ट करें ।

(ग) कवयित्री अपने जीवन की तुलना किसके साथ करती है ?

उत्तर : कवयित्री अपने जीवन की तुलना विस्तृत नभ के एक कोने से करती हैं, जिसका कोई निश्चित स्थान नहीं होता । उनका मानना है कि जैसे आकाश में बादल आते हैं और चले जाते हैं, वैसे ही जीवन भी अस्थिर और नश्वर है । वह कहती हैं कि उनका जीवन एक इतिहास की तरह है, जो बीते कल तक था और आज समाप्त हो गया ।

Quick Tip

कवियों द्वारा प्रयोग की गई उपमाओं और प्रतीकों को समझकर उत्तर देना चाहिए ।

(घ) उपर्युक्त अंश में कौन-सा रस है ?

उत्तर : उपर्युक्त पद्यांश में विप्रलंभ (वियोग) शृंगार रस की प्रधानता है। इसमें कवयित्री ने अपने अस्तित्व की क्षणभंगुरता और जीवन की अनिश्चितता को दर्शाया है, जिससे मन में करुणा और संवेदनशीलता उत्पन्न होती है। इस प्रकार यह करुण रस और शृंगार रस का मिश्रण प्रस्तुत करता है।

Quick Tip

रस पहचानते समय कविता की भावना और उसके प्रभाव को समझना आवश्यक होता है।

(ड) यह पद्यांश किस भावना को प्रकट करता है ?

उत्तर : यह पद्यांश जीवन की क्षणभंगुरता और अस्थिरता की भावना को प्रकट करता है। कवयित्री यह बताना चाहती हैं कि मनुष्य का अस्तित्व इस विशाल संसार में बहुत अल्पकालिक और अस्थायी होता है। वह जन्म लेता है, कुछ समय के लिए अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है और फिर समाप्त हो जाता है। यह कविता निराशा, वैराग्य और दार्शनिक चिंतन को भी प्रकट करती है।

Quick Tip

काव्य की भावना को समझने के लिए उसमें निहित दार्शनिक अर्थ और कवि की मनःस्थिति को ध्यान में रखना आवश्यक होता है।

अथवा

सुख भोग खोजने आते सब, आये तुम करने सत्य खोज,  
जग की मिट्टी के पुतले जन  
तुम आत्मा के मन के मनोज !  
जड़ता, हिंसा, स्पर्धा में भर  
चेतना, अहिंसा, नम्र ओज,  
पशुता का पंकज बना दिया  
तुमने मानवता का सरोज !

क) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर : यह पद्यांश कवि की प्रेरणादायक रचनाओं में से एक है, जिसमें सत्य और मानवता के महत्व को उजागर किया गया है। इसमें उन महान विभूतियों का गुणगान किया गया है जो इस संसार में केवल भौतिक सुखों की खोज में नहीं आए, बल्कि उन्होंने सत्य, अहिंसा और चेतना का मार्ग अपनाया। कवि ने इन विभूतियों को मानवता का पथप्रदर्शक माना है।

Quick Tip

संदर्भ लिखते समय कविता के मूल विचार और उसकी प्रेरणा को स्पष्ट करना आवश्यक होता है।

(ख) साधारण मनुष्य संसार में क्या खोजता है ?

उत्तर : साधारण मनुष्य इस संसार में सुख भोग और भौतिक वस्तुओं की खोज करता है । वह सांसारिक ऐश्वर्य, धन, वैभव और सुविधाओं की तलाश में जीवन व्यतीत करता है । कवि के अनुसार, अधिकांश लोग केवल इंद्रियों की तृप्ति और सांसारिक विलासिता के पीछे भागते हैं, लेकिन कुछ महापुरुष ऐसे होते हैं जो सत्य, अहिंसा और आत्मज्ञान की खोज में आते हैं ।

Quick Tip

साहित्य में साधारण मनुष्यों और महापुरुषों के उद्देश्यों के अंतर को समझकर उत्तर दें ।

(ग) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर : रेखांकित अंश "जड़ता, हिंसा, स्पर्धा में भर चेतना, अहिंसा, नम्र ओज" का तात्पर्य यह है कि इस संसार में जहां जड़ता (अज्ञान), हिंसा (अहंकार) और प्रतिस्पर्धा (द्वेष) भरी हुई है, वहाँ कुछ महापुरुष अपने ज्ञान, अहिंसा और सौम्यता के गुणों से इस नकारात्मकता को समाप्त कर देते हैं । वे समाज में ज्ञान का प्रकाश फैलाकर, अहिंसा का संदेश देकर और विनम्रता की शक्ति से मानवता को ऊँचा उठाते हैं । उनका उद्देश्य केवल भौतिक सुखों में लिप्त रहना नहीं, बल्कि मानवता के कल्याण के लिए कार्य करना होता है ।

Quick Tip

काव्य पंक्तियों की व्याख्या करते समय उनके भीतर छिपे गहरे दार्शनिक और नैतिक संदेश को स्पष्ट करें ।

(घ) 'पशुता का पंकज' से कवि का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर : 'पशुता का पंकज' का तात्पर्य पशु-सदृश प्रवृत्तियों (हिंसा, स्वार्थ, अज्ञान और लालच) से उत्पन्न होने वाले महान व्यक्तित्वों से है । कवि कहना चाहते हैं कि महापुरुष समाज की तमाम बुराइयों, अहंकार, हिंसा और लालच के बीच जन्म लेते हैं और उसी वातावरण में रहकर भी कमल की भाँति खिले रहते हैं । वे समाज को नई दिशा देते हैं और मानवता का उद्धार करते हैं ।

Quick Tip

कवि अक्सर बुराइयों और अच्छाइयों के बीच तुलना करने के लिए प्रतीकों का प्रयोग करते हैं, जिन्हें समझना आवश्यक होता है ।

(ङ) 'स्पर्धा' और 'नम्र-ओज' शब्दों के अर्थ लिखिए ।

उत्तर :

- **स्पर्धा** : 'स्पर्धा' का अर्थ होता है प्रतियोगिता, ईर्ष्या या प्रतिस्पर्धा । यह शब्द आमतौर पर किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करने या दूसरों से आगे बढ़ने की भावना को दर्शाता है ।
- **नम्र-ओज** : 'नम्र-ओज' दो शब्दों का संयोजन है—'नम्र' (विनम्रता) और 'ओज' (तेज या शक्ति) । इसका अर्थ है वह शक्ति जो विनम्रता के साथ हो, अर्थात् सौम्य तेज । यह शब्द उन व्यक्तियों के लिए प्रयोग होता है जो शक्ति और ऊर्जा से भरपूर होते हैं, लेकिन उनके स्वभाव में विनम्रता भी होती है ।

#### Quick Tip

शब्दों के अर्थ केवल शब्दकोशीय न होकर संदर्भानुसार व्याख्या करने चाहिए ।

5. (क) निम्नलिखित में से किसी एक लेखक का जीवनी - परिचय देते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए : ( शब्द सीमा 80 शब्द )

(i) वासुदेवशरण अग्रवाल

**उत्तर :** वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म 1904 में हुआ था । वे भारतीय संस्कृति, इतिहास, पुरातत्त्व और साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान थे । उन्होंने भारतीय कला, धर्म, साहित्य और समाजशास्त्र पर गहन शोध किया । उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति और इतिहास का गहन विश्लेषण मिलता है । वे भारतीय विद्या भवन और अन्य संस्थानों से जुड़े रहे ।

उन्होंने भारतीय इतिहास को न केवल ऐतिहासिक संदर्भ में, बल्कि सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से प्रस्तुत किया । वे संस्कृत साहित्य, पौराणिक कथाओं और भारतीय चित्रकला के विशिष्ट अध्येता थे । उनकी शोध-पद्धति ने भारतीय ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन को नई दिशा दी ।

**प्रमुख रचनाएँ :**

- **पाणिनिकालीन भारतवर्ष** – इसमें तत्कालीन समाज, राजनीति और अर्थव्यवस्था का विश्लेषण किया गया है ।
- **भारतीय कला** – इस ग्रंथ में भारतीय चित्रकला और शिल्पकला का वर्णन है ।
- **भारतीय संस्कृति** – इसमें भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों पर प्रकाश डाला गया है ।
- **गुप्तकालीन भारत** – गुप्तकाल के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं का गहन अध्ययन किया गया है ।
- **रामायण : एक सांस्कृतिक अध्ययन** – इसमें रामायण को सांस्कृतिक दृष्टिकोण से विश्लेषित किया गया है ।

उनकी रचनाएँ भारतीय संस्कृति और परंपराओं का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं । वे इतिहास, कला और धर्म को जोड़ने वाले महान विचारक थे ।

#### Quick Tip

वासुदेवशरण अग्रवाल ने भारतीय संस्कृति के वैज्ञानिक और ऐतिहासिक विश्लेषण को बढ़ावा दिया । उनकी कृतियाँ आधुनिक और प्राचीन भारत के बीच एक सेतु का कार्य करती हैं ।

## (ii) ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

उत्तर: डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (1931-2015) एक महान वैज्ञानिक, शिक्षाविद् और भारत के 11वें राष्ट्रपति थे। वे अपने प्रेरणादायक विचारों और वैज्ञानिक उपलब्धियों के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने भारतीय युवाओं को प्रेरित करने के लिए कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं, जिनमें विज्ञान, आत्मनिर्भरता और देश के विकास पर बल दिया गया है।

कलाम का जीवन संघर्ष और सफलता की मिसाल है। उन्होंने अत्यंत साधारण परिवार में जन्म लिया, लेकिन अपनी प्रतिभा और परिश्रम से भारत के मिसाइल कार्यक्रम को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। वे 'मिसाइल मैन' के रूप में प्रसिद्ध हुए और भारत के रक्षा अनुसंधान में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रमुख रचनाएँ:

- **Wings of Fire (आत्मकथा)** – यह उनकी आत्मकथा है, जिसमें उन्होंने अपने जीवन के संघर्षों और उपलब्धियों को विस्तार से बताया है।
- **Ignited Minds** – इस पुस्तक में उन्होंने भारत के युवाओं को देश के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित किया है।
- **India 2020** – इसमें उन्होंने भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की रूपरेखा प्रस्तुत की है।
- **My Journey** – इसमें उनके जीवन के प्रेरणादायक प्रसंगों का उल्लेख किया गया है।
- **Transcendence** – इसमें उन्होंने आध्यात्मिकता और विज्ञान के समन्वय पर विचार प्रस्तुत किए हैं।

उनकी लेखनी युवाओं को प्रेरित करने वाली और देश के भविष्य के लिए मार्गदर्शक रही है। वे एक वैज्ञानिक, नेता और महान विचारक थे, जिनकी रचनाएँ आज भी लोगों को प्रेरित करती हैं।

### Quick Tip

डॉ. कलाम को 'मिसाइल मैन' के रूप में जाना जाता है, और उनकी आत्मकथा 'Wings of Fire' विश्व प्रसिद्ध है।

## (iii) हरिशंकर परसाई

उत्तर: हरिशंकर परसाई (1924-1995) हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध व्यंग्यकार थे। वे अपनी तीखी सामाजिक और राजनीतिक व्यंग्य रचनाओं के लिए जाने जाते हैं। उनकी लेखनी समाज की विसंगतियों और भ्रष्टाचार पर करारा प्रहार करती है। वे आम आदमी की पीड़ा और व्यवस्था की विडंबनाओं को अपनी हास्य-व्यंग्य शैली में प्रस्तुत करते थे।

परसाई जी की रचनाएँ समाज में व्याप्त पाखंड, राजनीति की चालाकियाँ और आम आदमी की विवशताओं को उजागर करती हैं। वे हिंदी में व्यंग्य लेखन के अग्रणी लेखक थे और उनकी रचनाएँ आज भी समाज के लिए प्रासंगिक हैं।

प्रमुख रचनाएँ:

- **रानी नागफनी की कहानी** – इसमें समाज की विडंबनाओं को व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है।

- तट की खोज – इस रचना में समाज की यथार्थवादी स्थिति को उकेरा गया है ।
- जैसे उनके दिन फिरे – यह उपन्यास समाज के विभिन्न पहलुओं को व्यंग्यात्मक रूप में चित्रित करता है ।
- विकलांग श्रद्धा का दौर – इसमें समाज के दोहरे मापदंडों पर कटाक्ष किया गया है ।
- ठिठुरता हुआ गणतंत्र – इसमें भारतीय राजनीति और लोकतंत्र की कमजोरियों पर व्यंग्य किया गया है ।

उनकी रचनाएँ हास्य और व्यंग्य के माध्यम से समाज को जागरूक करने का कार्य करती हैं । वे मानते थे कि व्यंग्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज को जागरूक करने का हथियार है ।

#### Quick Tip

हरिशंकर परसाई को हिंदी व्यंग्य लेखन का जनक माना जाता है । उनकी रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और सामाजिक चेतना जगाने में सहायक हैं ।

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी प्रमुख रचनाओं का उल्लेख कीजिए :

#### (i) मैथिलीशरण गुप्त

उत्तर : मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964) हिंदी खड़ी बोली के प्रथम महाकवि माने जाते हैं । उन्हें "राष्ट्रकवि" की उपाधि दी गई थी । उनकी कविताओं में भारतीय संस्कृति, राष्ट्रप्रेम, सामाजिक सुधार और धार्मिक चेतना की झलक मिलती है । गुप्त जी की रचनाएँ प्राचीन भारतीय आदर्शों से प्रेरित थीं, जिनमें उन्होंने नारी जागरण, दलित उत्थान और राष्ट्रभक्ति पर विशेष बल दिया ।

उनकी रचनाएँ सरल भाषा में, ओजपूर्ण शैली और नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण होती थीं । वे खड़ी बोली काव्य के प्रवर्तक थे और हिंदी कविता को संस्कृतनिष्ठ भाषा की जटिलता से मुक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

प्रमुख रचनाएँ :

- साकेत – यह महाकाव्य रामायण की कथा पर आधारित है और इसमें उर्मिला के चरित्र को प्रमुखता दी गई है ।
- भारत-भारती – यह राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत काव्य संग्रह है, जिसे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान बहुत लोकप्रियता मिली ।
- जयद्रथ वध – महाभारत की कथा पर आधारित एक ओजस्वी काव्य ।
- यशोधरा – इसमें गौतम बुद्ध की पत्नी यशोधरा के मानसिक द्वंद्व को दर्शाया गया है ।
- द्वापर – यह महाभारत के पात्रों पर आधारित काव्य रचना है ।

उनकी रचनाएँ भारतीय संस्कृति और परंपराओं को मजबूत करने का कार्य करती हैं । वे हिंदी कविता के माध्यम से समाज में जागरूकता और राष्ट्रीय चेतना फैलाने में सफल रहे ।

### Quick Tip

मैथिलीशरण गुप्त को हिंदी का "राष्ट्रकवि" कहा जाता है। उनकी रचनाओं में राष्ट्रप्रेम और भारतीय संस्कृति की झलक मिलती है।

### (ii) सुमित्रानंदन पंत

उत्तर : सुमित्रानंदन पंत (1900-1977) हिंदी साहित्य के छायावादी युग के प्रमुख कवि थे। वे प्रकृति, सौंदर्य और मानवता के कवि माने जाते हैं। उनकी कविताओं में कोमलता, मधुरता और दार्शनिकता का अनूठा संगम देखने को मिलता है।

पंत जी की रचनाओं में प्रकृति का सुंदर चित्रण मिलता है, जिसे उन्होंने "प्रकृति के संगीत" के रूप में व्यक्त किया। उनके काव्य में मानवतावाद, दर्शन, रहस्यवाद और प्रगतिशीलता के विचार प्रमुखता से दिखते हैं। वे हिंदी कविता में नई चेतना और आधुनिक बौद्धिकता के संवाहक थे।

प्रमुख रचनाएँ :

- पल्लव – उनकी प्रारंभिक काव्य कृति, जिसमें प्रकृति के सौंदर्य का अनुपम चित्रण मिलता है।
- ग्राम्या – इसमें ग्राम्य जीवन के संघर्ष और सौंदर्य का वर्णन है।
- रूपाभ – छायावादी शैली में लिखा गया एक महत्वपूर्ण काव्य संग्रह।
- लोकायतन – इसमें समाजवाद, मानवतावाद और यथार्थवाद के तत्व मिलते हैं।
- चिदंबरा – इस कृति के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

पंत जी की कविताएँ न केवल प्रकृति प्रेम को दर्शाती हैं, बल्कि मानव जीवन की गहन अनुभूतियों और आदर्शों को भी व्यक्त करती हैं। वे हिंदी साहित्य में आधुनिक चेतना के प्रवर्तक माने जाते हैं।

### Quick Tip

सुमित्रानंदन पंत को "प्रकृति का सुकुमार कवि" कहा जाता है। उनकी रचनाओं में छायावाद, प्रगतिवाद और मानवतावाद का प्रभाव देखने को मिलता है।

### (iii) सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

उत्तर : सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' (1911-1987) हिंदी साहित्य के "प्रयोगवाद" और "नई कविता" के प्रवर्तक माने जाते हैं। वे एक अत्यंत प्रतिभाशाली कवि, उपन्यासकार, निबंधकार और संपादक थे। उनकी रचनाओं में दार्शनिकता, आत्मचिंतन और आधुनिकतावादी विचारधारा देखने को मिलती है।

अज्ञेय जी की लेखनी में व्यक्ति केंद्रित चेतना, अस्तित्ववाद और नवीन प्रयोगधर्मिता का विशेष स्थान था। वे भाषा और शिल्प के स्तर पर नवीन प्रयोगों के लिए जाने जाते हैं। उनकी कविता में गहरी संवेदनशीलता और गंभीर दार्शनिकता का समावेश होता है।

प्रमुख रचनाएँ :

- भग्नदूत – उनकी प्रारंभिक कविताओं का संग्रह ।
- इत्यलम् – उनकी प्रयोगवादी कविता का एक उत्कृष्ट उदाहरण ।
- बावरा अहेरी – प्रसिद्ध काव्य संग्रह ।
- शेखर : एक जीवनी – हिंदी उपन्यास में आत्मकथात्मक शैली का अद्भुत उदाहरण ।
- अपने अपने अजनबी – अज्ञेय जी का एक महत्वपूर्ण उपन्यास ।

उन्होंने 'नई कविता' आंदोलन को मजबूत किया और 'दिनमान' पत्रिका का संपादन भी किया । उनकी लेखनी में स्वतंत्रता, प्रयोगवाद और आधुनिक बौद्धिकता का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है ।

#### Quick Tip

अज्ञेय जी हिंदी साहित्य में प्रयोगवाद और नई कविता के अग्रणी लेखक थे । उनकी रचनाओं में दर्शन, आत्मसंघर्ष और आधुनिक चेतना प्रमुख रूप से दिखाई देती हैं ।

6. 'ध्रुवयात्रा' अथवा 'बहादुर' कहानी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए । (अधिकतम शब्द - सीमा : 80 शब्द)

उत्तर :

'ध्रुवयात्रा' कहानी का उद्देश्य : 'ध्रुवयात्रा' कहानी सियारामशरण गुप्त द्वारा लिखित एक प्रेरणा-दायक कथा है, जिसका उद्देश्य संघर्ष, तपस्या और धैर्य के महत्व को समझाना है ।

इस कहानी में ध्रुव नामक बालक की कठिन यात्रा का वर्णन है, जो सत्य और आत्मज्ञान की खोज में अडिग रहता है । यह कथा हमें सिखाती है कि यदि मनुष्य में दृढ़ संकल्प और समर्पण हो, तो वह किसी भी कठिनाई को पार कर सकता है । ध्रुव का चरित्र आत्मबल, निष्ठा और धैर्य का प्रतीक है, जो पाठकों को प्रेरित करता है ।

'बहादुर' कहानी का उद्देश्य : 'बहादुर' कहानी हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित एक सामाजिक व्यंग्य कथा है, जिसका उद्देश्य सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव और दिखावे की मानसिकता पर कटाक्ष करना है ।

इस कहानी में 'बहादुर' नामक वफादार कुत्ते के माध्यम से समाज की रूढ़िवादिता और भेदभावपूर्ण सोच को उजागर किया गया है । लेखक यह संदेश देता है कि सच्ची बहादुरी बाहरी दिखावे से नहीं, बल्कि आंतरिक गुणों और सच्ची निष्ठा से आती है । यह कहानी समाज में व्याप्त पाखंड और वर्गभेद को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत करती है ।

#### Quick Tip

'ध्रुवयात्रा' कहानी आत्मसंघर्ष, निष्ठा और तपस्या के महत्व को दर्शाती है, जबकि 'बहादुर' कहानी समाज में व्याप्त भेदभाव और आडंबरपूर्ण मानसिकता पर गहरा व्यंग्य प्रस्तुत करती है ।

अथवा

'पंचलाइट' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए । (अधिकतम शब्द - सीमा : 80 शब्द)

उत्तर : 'पंचलाइट' कहानी फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध कथा है, जिसमें ग्रामीण समाज, हास्य, प्रेम और रूढ़िवादिता का सुंदर चित्रण किया गया है ।

कहानी में गाँव के लोग पहली बार एक पंचलाइट (लालटेन) लाते हैं, लेकिन उसे जलाने के लिए पढ़े-लिखे व्यक्ति की आवश्यकता पड़ती है । गाँव के लोग आपसी मतभेद और जातिगत भेदभाव के कारण गोबर नामक युवक को बहिष्कृत कर देते हैं, क्योंकि उसने अपनी प्रेमिका मुनरी से बात करने का साहस किया था । हालाँकि, जब पंचलाइट जलाने का कोई उपाय नहीं सूझता, तब मजबूरी में गोबर को बुलाया जाता है । वह पंचलाइट जलाने में सफल होता है और उसका सामाजिक बहिष्कार समाप्त हो जाता है । इस कहानी में ग्रामीण समाज की रूढ़िवादी मानसिकता, प्रेम और स्वीकृति की जटिलताएँ, हास्य-व्यंग्य और यथार्थवादी चित्रण देखने को मिलता है । लेखक ने अपने विशेष आंचलिक शब्दों और भाषा शैली से इसे अत्यंत जीवंत बना दिया है ।

#### Quick Tip

'पंचलाइट' कहानी ग्रामीण समाज की रूढ़ियों, प्रेम और हास्य-व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था पर कटाक्ष करती है । यह बताती है कि समाज प्रेम और व्यक्तिगत भावनाओं को महत्व देने के बजाय रूढ़ियों में जकड़ा रहता है ।

7. स्वपठित खण्डकाव्य के आधार पर किसी एक खण्ड के एक प्रश्न का उत्तर दीजिए : ( अधिकतम शब्द - सीमा : 80 शब्द)

(क) 'त्यागपथी' खण्डकाव्य के आधार पर 'राज्यश्री' का चरित्र चित्रण कीजिए ।

उत्तर : 'त्यागपथी' खण्डकाव्य में राज्यश्री का चरित्र एक महान और प्रेरणादायक नायिका के रूप में उभरता है । वह अपने राज्य और प्रजा के प्रति अपनी जिम्मेदारी को प्राथमिकता देती हैं । राज्यश्री का जीवन त्याग, साहस, और कर्तव्यनिष्ठा का प्रतीक है । उनका समर्पण और समाज के प्रति सेवा की भावना उन्हें एक आदर्श बनाती है ।

- **कर्तव्य और निष्ठा** : राज्यश्री अपने कर्तव्यों को सर्वोच्च मानती हैं और उन्हें पूरा करने के लिए किसी भी प्रकार का बलिदान करने के लिए तैयार रहती हैं ।
- **त्याग और साहस** : वह व्यक्तिगत सुखों को त्यागकर समाज और राज्य के भले के लिए संघर्ष करती हैं । उनके साहस और दृढ़ संकल्प से ही समाज में बदलाव आता है ।
- **समाज और प्रजा के प्रति समर्पण** : राज्यश्री हमेशा अपनी प्रजा के कल्याण के लिए कार्य करती हैं, और अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं और सुखों को समाज के हित में बलिदान करती हैं ।

राज्यश्री का चरित्र 'त्यागपथी' में उच्चतम मानवीय मूल्यों का आदर्श प्रस्तुत करता है । वह केवल एक शासक नहीं, बल्कि समाज की भलाई के लिए कार्यरत एक आदर्श नायिका हैं ।

### Quick Tip

राज्यश्री का चरित्र हमें त्याग, समर्पण और साहस के साथ कर्तव्यों का पालन करने की प्रेरणा देता है।

### अथवा

'त्यागपथी' खण्डकाव्य के 'पंचम सर्ग' की कथा अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: 'त्यागपथी' खण्डकाव्य का 'पंचम सर्ग' एक महत्वपूर्ण मोड़ प्रस्तुत करता है, जिसमें राज्यश्री अपने कर्तव्यों और समाज के भले के लिए व्यक्तिगत सुखों का त्याग करती हैं। इस सर्ग में राज्यश्री का आंतरिक संघर्ष और उनके निर्णय की गहराई को दर्शाया गया है। वह अपने व्यक्तिगत रिश्तों और राज्य की जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाने के लिए संघर्ष करती हैं। इस सर्ग में उन्होंने समाज की सेवा के लिए स्वयं को बलिदान करने का संकल्प लिया।

- **आंतरिक संघर्ष**: राज्यश्री को अपने व्यक्तिगत सुखों और कर्तव्यों के बीच संतुलन बनाना होता है।
- **समाज के प्रति समर्पण**: वह अपने राज्य और प्रजा की भलाई के लिए व्यक्तिगत खुशियों को छोड़ देती हैं।
- **बलिदान और साहस**: राज्यश्री अपने कर्तव्यों के लिए हर प्रकार का बलिदान देने के लिए तैयार रहती हैं।

'पंचम सर्ग' में राज्यश्री के आत्मसंघर्ष और उनके आदर्श चरित्र का सुंदर चित्रण किया गया है।

### Quick Tip

'पंचम सर्ग' में राज्यश्री के बलिदान और समाज के प्रति उनके समर्पण का महत्वपूर्ण संदेश दिया गया है।

(ख) 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य का कथानक अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य का कथानक सत्य, धर्म और अधर्म के बीच संघर्ष को प्रदर्शित करता है। इस काव्य में दुर्योधन और पांडवों के बीच महाभारत युद्ध का चित्रण है, जिसमें अंततः सत्य और धर्म की जीत होती है। काव्य के अनुसार, सत्य हमेशा अधर्म के खिलाफ विजय प्राप्त करता है, चाहे युद्ध के दौरान कितनी भी कठिनाइयाँ आएं। इस कथानक में अच्छाई की ताकत और ईश्वर का समर्थन दिखाया गया है, जो अंततः दुर्योधन और अधर्म का पराभव करते हैं।

- **धर्म और अधर्म का संघर्ष**: काव्य में धर्म की रक्षा के लिए पांडवों के संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है।
- **सत्य की विजय**: सत्य के पक्ष में युद्ध के दौरान पांडवों को विजय प्राप्त होती है, जो अंततः अधर्म को हराता है।

- ईश्वर का मार्गदर्शन : श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन में पांडवों को सत्य की विजय मिलती है ।  
'सत्य की जीत' खण्डकाव्य में यह संदेश दिया गया है कि सत्य की हमेशा विजय होती है ।

#### Quick Tip

'सत्य की जीत' में यह स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है कि अच्छाई और धर्म अंततः जीतते हैं ।

### अथवा

'सत्य की जीत' खण्डकाव्य के आधार पर 'दुर्योधन' का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

उत्तर : 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य में दुर्योधन का चरित्र एक अत्यंत जिद्दी और अहंकारी नायक के रूप में चित्रित किया गया है । वह सत्य और धर्म से दूर रहता है और केवल अपनी शक्ति और स्वार्थ के लिए संघर्ष करता है । दुर्योधन का चरित्र अधर्म और अहंकार का प्रतीक है । वह पांडवों के खिलाफ साजिशों में उलझा रहता है और युद्ध में सत्य के विपरीत अपने मार्ग पर चलता है, जिससे उसका पराभव होता है ।

- अहंकार और जिद : दुर्योधन का चरित्र उसकी शक्ति और स्वार्थ के प्रति अत्यधिक लगाव को दर्शाता है ।
- अधर्म का पालन : वह हमेशा अधर्म के रास्ते पर चलता है, जो अंततः उसे पराजित कर देता है ।
- सत्य और धर्म का विरोध : दुर्योधन का जीवन सत्य और धर्म के विपरीत रहता है, जिससे उसकी हार होती है ।

दुर्योधन का चरित्र 'सत्य की जीत' खण्डकाव्य में अहंकार और अधर्म के विनाश का प्रतीक है ।

#### Quick Tip

दुर्योधन का चरित्र हमें यह सिखाता है कि अहंकार और अधर्म का अंत निश्चित होता है ।

(ग) 'रश्मिर्थी' खण्डकाव्य का कथानक लिखिए ।

उत्तर : 'रश्मिर्थी' खण्डकाव्य का कथानक कर्ण के जीवन और उसकी वीरता की गाथा है । इस काव्य में कर्ण के संघर्षों, त्याग और उसकी महानता को प्रस्तुत किया गया है । कर्ण एक महान योद्धा था, जिसे सदैव अधर्म की ओर धकेला गया । काव्य में कर्ण की निष्कलंक निष्ठा और पांडवों से संघर्ष को प्रमुखता से दर्शाया गया है । वह अंत में अपने कर्तव्य को निभाता हुआ वीरगति को प्राप्त होता है । काव्य में कर्ण का जीवन दुख, साहस और महानता से भरा हुआ है ।

- कर्ण का संघर्ष : कर्ण का जीवन संघर्ष और वीरता से भरा हुआ था, जो अंततः उसकी वीरगति का कारण बना ।

- **कर्ण का त्याग :** कर्ण का त्याग और उसकी निष्ठा उसकी महानता को दर्शाते हैं ।
- **धर्म और अधर्म के बीच संघर्ष :** कर्ण का संघर्ष धर्म और अधर्म के बीच लगातार चलता रहता है, जिसमें वह हमेशा सत्य के मार्ग पर चलता है ।

'रश्मिर्थी' खण्डकाव्य में कर्ण का जीवन, उसकी निष्ठा और उसके संघर्ष की महाकाव्यात्मक प्रस्तुति दी गई है ।

#### Quick Tip

'रश्मिर्थी' में कर्ण के चरित्र को एक वीर और त्यागी योद्धा के रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

### अथवा

'रश्मिर्थी' के नायक 'कर्ण' का चरित्र चित्रण कीजिए ।

उत्तर : 'रश्मिर्थी' के नायक कर्ण का चरित्र महानता, त्याग और संघर्ष से भरपूर है । वह न केवल एक अद्वितीय योद्धा था, बल्कि उसकी निष्ठा और कर्तव्य के प्रति समर्पण भी उसे विशेष बनाते हैं । कर्ण ने कभी अपनी पहचान नहीं छिपाई, और अपने जीवन में कई दुखों और विरोधाभासों का सामना किया । वह पांडवों के प्रति अपनी प्रतिद्वंद्विता के बावजूद उनका सम्मान करता था । कर्ण का चरित्र धर्म, वीरता और पराक्रम का प्रतीक है ।

- **धर्म के प्रति निष्ठा :** कर्ण ने अपने कर्तव्य और धर्म के प्रति अडिग निष्ठा दिखाई, जो उसकी वीरता को और भी प्रमुख बनाता है ।
- **पारिवारिक संघर्ष :** कर्ण का जीवन पारिवारिक संघर्षों से भरा था, लेकिन वह हमेशा अपनी पहचान को महत्व देता था ।
- **कर्ण की वीरता :** कर्ण एक महान योद्धा था और उसने युद्ध में अनेक महत्वपूर्ण विजय प्राप्त की ।

'रश्मिर्थी' में कर्ण का चरित्र दुखों, साहस और कर्तव्य के प्रति अडिग निष्ठा का आदर्श प्रस्तुत करता है ।

#### Quick Tip

कर्ण का चरित्र न केवल वीरता बल्कि त्याग और समर्पण का भी प्रतीक है ।

(घ) 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य के आधार पर 'गाँधीजी' का चरित्र चित्रण कीजिए ।

उत्तर : 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य में गांधीजी का चरित्र सत्य, अहिंसा और त्याग का प्रतीक है । गांधीजी का जीवन सत्य के मार्ग पर चलने, भारतीय समाज में सामाजिक सुधार लाने और स्वतंत्रता संग्राम में नेतृत्व देने के लिए समर्पित था । उन्होंने सत्याग्रह और अहिंसात्मक प्रतिरोध के माध्यम से अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया । उनका चरित्र समाज के लिए प्रेरणादायक था, और वे सत्य और धर्म के लिए समर्पित थे ।

- सत्य और अहिंसा का पालन : गांधीजी का जीवन सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों पर आधारित था ।
- स्वतंत्रता संग्राम में योगदान : वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता थे और उनके नेतृत्व में आंदोलन सफल हुआ ।
- समाज सुधारक : गांधीजी ने भारतीय समाज में छुआछूत और असमानता के खिलाफ कार्य किए ।

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य में गांधीजी के नेतृत्व और उनके आदर्शों का चित्रण किया गया है ।

#### Quick Tip

गांधीजी का चरित्र सत्य, अहिंसा, और समाज सेवा का प्रेरणास्त्रोत है ।

### अथवा

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।

उत्तर : 'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य का कथानक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और महात्मा गांधी के नेतृत्व में होने वाले संघर्षों के इर्द-गिर्द घूमता है । काव्य में गांधीजी के सत्याग्रह, असहमति और अहिंसा के माध्यम से भारतीयों के आत्मनिर्भर बनने की कोशिश को दर्शाया गया है । यह काव्य स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरक गाथा है, जिसमें भारतीय जनता का संघर्ष, बलिदान और एकजुटता प्रमुख रूप से प्रस्तुत किया गया है । काव्य का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए संघर्ष का महत्व बताना है ।

- स्वतंत्रता संग्राम : काव्य में गांधीजी के नेतृत्व में भारत के स्वतंत्रता संग्राम का जीवंत चित्रण किया गया है ।
- सत्याग्रह और अहिंसा : गांधीजी ने सत्याग्रह और अहिंसा के मार्ग से अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया ।
- भारतीय जनता की भूमिका : काव्य में भारतीय जनता के संघर्ष, बलिदान और एकजुटता की महत्वपूर्ण भूमिका दिखाई गई है ।

'मुक्तियज्ञ' खण्डकाव्य में स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरक गाथा और महात्मा गांधी के सिद्धांतों को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है ।

#### Quick Tip

'मुक्तियज्ञ' में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और गांधीजी के नेतृत्व की गाथा को प्रभावशाली तरीके से चित्रित किया गया है ।

(ड) 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र चित्रण कीजिए ।

उत्तर : 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र एक आदर्श और संघर्षशील व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वह अपने कर्तव्यों को सर्वोपरि मानता है और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के लिए हमेशा तत्पर रहता है।

- **नायक की निष्ठा और साहस :** नायक का जीवन निष्ठा, साहस और परिश्रम से भरा हुआ है। वह किसी भी संकट का सामना करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता है।
- **नायक का संघर्ष :** नायक को समाज की बुराइयों और कुरीतियों से संघर्ष करना पड़ता है, लेकिन वह अपने आदर्शों से कभी नहीं डिगता।
- **नायक की प्रेरणा :** नायक का चरित्र समाज को प्रेरित करता है कि वे अपने कर्तव्यों के प्रति समर्पित रहें और समाज में अच्छाई फैलाने के लिए प्रयास करें।

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य का नायक हमें यह सिखाता है कि सच्ची सफलता केवल संघर्ष, कर्तव्यनिष्ठा और नैतिकता से प्राप्त होती है।

#### Quick Tip

नायक का चरित्र संघर्ष, निष्ठा और समाज के प्रति जिम्मेदारी को दर्शाता है, जो हमें अपने कर्तव्यों को निभाने की प्रेरणा देता है।

### अथवा

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य के कथानक पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : 'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य का कथानक एक आदर्श नायक के संघर्ष, समर्पण और समाज के प्रति कर्तव्य को प्रस्तुत करता है। यह काव्य एक व्यक्ति के जीवन के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों के खिलाफ संघर्ष और अच्छाई की विजय की कहानी कहता है।

- **कथानक का आरंभ :** काव्य की शुरुआत नायक के संघर्ष और जीवन के उद्देश्य से होती है। वह समाज में फैली कुरीतियों और अन्याय के खिलाफ उठता है।
- **कथानक में उतार-चढ़ाव :** नायक को जीवन में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, लेकिन वह कभी हार नहीं मानता। उसकी निष्ठा और साहस उसे सफलता की ओर अग्रसर करते हैं।
- **कथानक का संदेश :** काव्य का अंत यह दर्शाता है कि सच्ची विजय संघर्ष, नैतिकता और कर्तव्य के पालन से प्राप्त होती है। नायक की सफलता समाज में अच्छाई के प्रसार का प्रतीक बन जाती है।

'आलोकवृत्त' खण्डकाव्य का कथानक हमें यह सिखाता है कि हर व्यक्ति को अपने कर्तव्यों को निभाने के लिए संघर्ष करना चाहिए, और अंत में अच्छाई ही विजय प्राप्त करती है।

#### Quick Tip

कथानक में नायक का संघर्ष और समाज के प्रति समर्पण हमें यह सिखाता है कि कर्तव्यनिष्ठता और संघर्ष से समाज में बदलाव लाया जा सकता है।

(च) 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य के आधार पर 'दशरथ' का चरित्र चित्रण कीजिए ।

उत्तर : 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य में राजा दशरथ का चरित्र एक आदर्श राजा और पिता के रूप में प्रस्तुत किया गया है । वह न्यायप्रिय, कर्तव्यनिष्ठ और अपनी प्रजा के प्रति दयालु थे ।

- **राजा दशरथ का कर्तव्य :** राजा दशरथ अपने राज्य और प्रजा के प्रति अपने कर्तव्यों को सर्वोपरि मानते थे । उन्होंने हमेशा अपने राज्य की भलाई के लिए कार्य किया ।
- **दशरथ का पितृत्व :** दशरथ एक अच्छे पिता भी थे, लेकिन उनका पितृत्व तब परीक्षा में पड़ गया जब उन्होंने अपने पुत्र श्रवण को मारने का अप्रिय कार्य किया, जिससे उनका दिल टूटा और वे मानसिक रूप से आहत हो गए ।
- **दशरथ का दुःख :** श्रवण के मृत शरीर को देखकर दशरथ को गहरी पीड़ा हुई और उन्होंने अपना जीवन कठिनाइयों से भरा हुआ पाया । यह घटना दशरथ के दिल की गहरी पीड़ा को दर्शाती है, जो अंत में उनके लिए जीवन के सबसे बड़े दुखों में से एक बन गई ।

राजा दशरथ का चरित्र कर्तव्य और पिता के रूप में उनकी निष्ठा का प्रतीक है, लेकिन उनका दुःख और पापभावना यह दर्शाता है कि वह एक सच्चे और आदर्श राजा थे ।

#### Quick Tip

राजा दशरथ का चरित्र हमें यह सिखाता है कि कर्तव्यनिष्ठता और दायित्वों का पालन करते हुए भी हमें अपनी भावनाओं और परिवार के प्रति संवेदनशील रहना चाहिए ।

### अथवा

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य का कथानक संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए ।

उत्तर : 'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य का कथानक एक पुत्र के लिए अपने माता-पिता की सेवा और आदर्श पितृत्व का चित्रण करता है ।

- **कथानक का आरंभ :** श्रवण कुमार अपने अंधे माता-पिता को जंगल में तीर्थ यात्रा पर ले जाते हैं, ताकि वे भी तीर्थों का लाभ ले सकें ।
- **श्रेणियों का वर्णन :** यात्रा के दौरान श्रवण कुमार का सामना राजा दशरथ से होता है । राजा दशरथ अपने धनुष से पानी लाने के लिए श्रवण को मार डालते हैं, बिना यह जाने कि वह किसी को मार रहे हैं ।
- **कथानक का मोड़ :** जब राजा दशरथ को यह अहसास होता है कि उन्होंने श्रवण कुमार को मार डाला है, तो वह अति दुःखी होते हैं और अपने जीवन के शेष भाग को इस पाप का प्रायश्चित्त करने में बिताते हैं ।
- **कथानक का संदेश :** इस काव्य का संदेश यह है कि माता-पिता की सेवा सर्वोत्तम धर्म है और हमें कभी भी किसी के प्रति अन्याय नहीं करना चाहिए ।

'श्रवणकुमार' खण्डकाव्य एक आदर्श पुत्र की कथा है, जो अपने माता-पिता के प्रति अपनी निष्ठा और श्रद्धा से प्रेरित है ।

### Quick Tip

कथानक से यह शिक्षा मिलती है कि माता-पिता की सेवा सर्वोत्तम धर्म है और हमें जीवन में अपने कर्तव्यों का पालन करना चाहिए ।

## 2 (खण्ड ख)

8.(क) दिये गये संस्कृत गद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

युवक : मालवीयः स्वकीयेन प्रभावपूर्ण भाषणेन जनानां मनांसि अमोहयत् । अतः अस्य सुहृदः तं प्राड्विवाकपदवीं प्राप्य देशस्य श्रेष्ठतरां सेवां कर्तुं प्रेरितवन्तः । तदनुसारम् अयं विधिपरीक्षामु-  
त्रीय प्रयागस्थे उच्चन्यायालये प्राड्विवाककर्म कर्तुमारभत् । विधेः प्रकृष्टज्ञानेन मधुरालापेन उदार-  
व्यवहारेण चायं शीघ्रमेव मित्राणां न्यायाधीशाच्च सम्मानभाजनमभवत् ।

उत्तर : सन्दर्भ : यह गद्यांश मदन मोहन मालवीय के जीवन और उनके कार्यों के बारे में है, विशेष रूप से उनके प्रभावशाली भाषणों और विधिक करियर के बारे में ।

हिन्दी अनुवाद : युवक मालवीय ने अपनी प्रभावशाली और आकर्षक भाषण शैली से लोगों के दिलों को जीत लिया । इसके कारण, उनके मित्रों ने उन्हें प्राड्विवाक (वकील) की परीक्षा उत्तीर्ण कर देश की श्रेष्ठतम सेवा करने के लिए प्रेरित किया । इस प्रेरणा के बाद, उन्होंने विधि परीक्षा उत्तीर्ण कर प्रयाग में उच्च न्यायालय में वकालत कार्य शुरू किया । अपनी गहरी विधि-ज्ञान, मधुर बातचीत और उदार स्वभाव से वह शीघ्र ही अपने मित्रों और न्यायाधीशों का सम्मान प्राप्त करने में सफल हो गए ।

### Quick Tip

मदन मोहन मालवीय का जीवन हमें यह सिखाता है कि प्रभावशाली भाषण और कठोर परिश्रम से किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त की जा सकती है ।

## अथवा

संस्कृतसाहित्यस्य आदिकविः वाल्मीकिः, महर्षिव्यासः, कविकुलगुरुः कालिदासः अन्ये च भास-भारवि-  
भवभूत्यादयो महाकवयः स्वकीयैः ग्रन्थरत्नै अद्यापि पाठकानां हृदि विराजन्ते । इयं भाषा अस्माभिः  
मातृसमं सम्माननीया वन्दनीया च यतो भारतमातुः स्वातन्त्र्यं, गौरवम्, अखण्डत्वं सांस्कृतिकमेकत्व-  
ञ्च संस्कृते नैव सुरक्षितं शक्यन्ते । इयं संस्कृतभाषा सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा श्रेष्ठा चास्ति । ततः  
सुष्ठुक्तम् 'भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाण भारती' इति ।

उत्तर : सन्दर्भ : यह गद्यांश संस्कृत साहित्य और भाषा के महानता के बारे में है, विशेष रूप से इसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के बारे में ।

हिन्दी अनुवाद : संस्कृत साहित्य के आदिकवि महर्षि वाल्मीकि, महर्षि व्यास, कविकुलगुरु कालिदास और अन्य महान कवि जैसे भास, भारवि, भवभूति अपनी रचनाओं के माध्यम से आज भी पाठकों के हृदय में विराजमान हैं । यह भाषा हमारी मातृभाषा के समान सम्माननीय और वंदनीय है क्योंकि भारत माता की स्वतंत्रता, गौरव, अखंडता और सांस्कृतिक एकता को केवल संस्कृत भाषा के माध्यम से ही सुरक्षित रखा जा सकता है ।

संस्कृत भाषा सभी भाषाओं में प्राचीनतम और श्रेष्ठतम मानी जाती है । अतः यह उचित ही कहा गया है कि 'भाषाओं में श्रेष्ठ, मधुर और दिव्य भाषा गीर्वाणभारती (संस्कृत) ही है ।'

#### Quick Tip

संस्कृत भाषा न केवल एक प्राचीन भाषा है, बल्कि भारतीय संस्कृति और ज्ञान का आधार भी है, जिसे हमें संरक्षित और प्रसारित करना चाहिए ।

(ख) दिये गये पद्यांशों में से किसी एक का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

न मे रोचते भद्रं वः उलूकस्याभिषेचनम् ।

अकरुद्धस्य मुखं पश्य कथं क्रुद्धो भविष्यति । ।

उत्तर : सन्दर्भ : यह श्लोक संस्कृत साहित्य में 'काक उलूक' के संवाद से लिया गया है, जिसमें उलूक (न्यायशास्त्र में एक पक्षी) काक से अपने अभिषेक के तरीके के बारे में बात करता है ।

हिन्दी अनुवाद : हे भद्र जनों, मुझे उलूक का अभिषेक नहीं पसंद है । यदि कोई व्यक्ति क्रोधित न हो तो उसके मुख से क्रोध कैसे प्रकट होगा ? यही कारण है कि एक व्यक्ति जो शांत और सजीव है, उसे कोई भी तरीका अपव्ययी या अनुकूल नहीं लग सकता ।

#### Quick Tip

इस श्लोक से यह समझ में आता है कि शांति और क्रोध की अभिव्यक्ति आपसी परस्पर संबंधों में संयम के साथ होती है ।

### अथवा

जल-बिन्दु-निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।

सहेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च । ।

उत्तर : सन्दर्भ : यह श्लोक संस्कृत में शिक्षा, धर्म और धन के संदर्भ में दिया गया है, और यह यह बताता है कि जैसे जल बूँद-बूँद से घड़ा भरता है वैसे ही ज्ञान, धर्म और धन भी धीरे-धीरे बढ़ते हैं ।

हिन्दी अनुवाद : जैसे जल की प्रत्येक बूँद से घड़ा धीरे-धीरे भरता है, वैसे ही सभी प्रकार की विद्या, धर्म और धन भी धीरे-धीरे अपनी गति से इकट्ठे होते हैं । इसमें धैर्य और संयम का होना आवश्यक है, क्योंकि एक-एक कदम से ही समृद्धि और ज्ञान की प्राप्ति होती है ।

#### Quick Tip

इस श्लोक से यह सिखने को मिलता है कि जीवन में सफलता के लिए एक-एक कदम को महत्व देना चाहिए और संयमित होकर अपनी यात्रा पूरी करनी चाहिए ।

9. निम्नलिखित मुहावरों में से किसी एक का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(क) अन्न-जल पूरा हो जाना

उत्तर : अर्थ : इस मुहावरे का अर्थ है - किसी की स्थिति इतनी कठिन हो जाना कि उसे अपना जीवन यापन करना भी मुश्किल हो जाए ।

वाक्य में प्रयोग : पिछले कुछ महीनों से उनका व्यापार इतना खराब चल रहा था कि अब अन्न-जल पूरा हो जाना जैसी स्थिति हो गई थी ।

#### Quick Tip

यह मुहावरा तब प्रयोग किया जाता है जब किसी की स्थिति अत्यधिक कठिन हो जाती है, जिसमें जीवन की बुनियादी आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं हो पातीं ।

#### (ख) अपना ही राग अलापना

उत्तर : अर्थ : इस मुहावरे का अर्थ है - अपनी ही बातों का प्रचार करना, अपनी ही प्रशंसा करना ।

वाक्य में प्रयोग : तुम तो हमेशा अपना ही राग अलापते रहते हो, कभी दूसरों की बात भी सुना करो ।

#### Quick Tip

यह मुहावरा तब प्रयोग किया जाता है जब कोई केवल अपनी ही बातों को बढ़ा-चढ़ा कर पेश करता है, बिना दूसरों की बातों को महत्व दिए ।

#### (ग) दाल में काला होना

उत्तर : अर्थ : इस मुहावरे का अर्थ है - किसी कार्य में कोई गड़बड़ी या धोखाधड़ी का होना ।

वाक्य में प्रयोग : उसके पास इतनी संपत्ति कैसे आ गई, कहीं न कहीं दाल में काला तो है ।

#### Quick Tip

यह मुहावरा तब प्रयोग किया जाता है जब किसी व्यक्ति या स्थिति में कुछ संदिग्ध या गलत होने का संदेह होता है ।

#### (घ) सूरज को दीपक दिखाना

उत्तर : अर्थ : इस मुहावरे का अर्थ है - ऐसी चीज़ का गुणगान करना जो अपने आप में पहले से ही महान हो ।

वाक्य में प्रयोग : तुम सूरज को दीपक दिखाने की कोशिश कर रहे हो, क्योंकि इस शहर में सब लोग जानते हैं कि वह कितना सक्षम है ।

#### Quick Tip

यह मुहावरा तब प्रयोग किया जाता है जब किसी व्यक्ति या वस्तु को उस चीज़ का गुणगान किया जाता है जो पहले से ही प्रसिद्ध या श्रेष्ठ हो ।

10. अपठित गद्यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : जिस प्रकार सुखी होने का प्रत्येक प्राणी को अधिकार है, उसी प्रकार मुक्तांतक होने का भी प कार्यक्षेत्र के चक्रव्यूह में पड़कर जिस प्रकार सुखी होना प्रयत्न साध्य होता है उसी प्रकार निर्भय होना भी । निर्भयता के सम्पादन के लिए दो बातें अपेक्षित होती हैं -- पहली तो यह कि दूसरों को हमसे किसी प्रकार का भय या कष्ट न हो ; दूसरी यह कि दूसरे हमको कष्ट या भय पहुँचाने का साहस न कर सकें । इनमें से एक का संबंध उत्कृष्ट शील से है और दूसरी का शक्ति और पुरुषार्थ से । इस संसार में किसी को न डराने से ही डरने की सम्भावना दूर नहीं हो सकती । साधु से साधु प्रकृतिवाले को क्रूर लोभियों और दुर्जनों से क्लेश पहुँचता है । अतः उनके प्रयत्नों को विफल करने या भय-संचार द्वारा रोकने की आवश्यकता से हम बच नहीं सकते ।

(क) सुखी होने के साथ और क्या होना प्रयत्न - साध्य होता है ?

उत्तर : सुखी होने के साथ निर्भय होना भी प्रयत्न-साध्य होता है ।

#### Quick Tip

सुखी होने के साथ हमें निर्भयता की भी आवश्यकता होती है, जो जीवन में मानसिक शांति और संतुलन बनाए रखती है ।

(ख) निर्भयता के सम्पादन के लिए क्या करना अपेक्षित है ?

उत्तर : निर्भयता के सम्पादन के लिए दो बातें अपेक्षित होती हैं -- पहली यह कि दूसरों को हमसे किसी प्रकार का भय या कष्ट न हो ; दूसरी यह कि दूसरे हमको कष्ट या भय पहुँचाने का साहस न कर सकें ।

#### Quick Tip

निर्भयता पाने के लिए हमें शील और शक्ति का संतुलन रखना होता है, ताकि हम किसी भी स्थिति में शांति और सुरक्षा महसूस कर सकें ।

(ग) शील, शक्ति और पुरुषार्थ जैसी वृत्तियों का सम्बन्ध किनसे है ?

उत्तर : शील, शक्ति और पुरुषार्थ जैसी वृत्तियों का सम्बन्ध क्रमशः उत्कृष्ट शील, शक्ति और पुरुषार्थ से है ।

#### Quick Tip

शील, शक्ति और पुरुषार्थ हमें अपने आंतरिक विकास और जीवन के प्रति एक सशक्त दृष्टिकोण प्रदान करते हैं ।

### अथवा

कुछ कार्य ऐसे भी होते हैं, जो अनेक छोटे-छोटे कर्मों की समष्टि जैसे होते हैं । उदाहरणार्थ, यदि हम समुद्र के किनारे खड़े हों और लहरों को किनारे से टकराते हुए सुनें, तो ऐसा मालूम होता है कि एक बड़ी

भारी आवाज हो रही है। परन्तु हम जानते हैं कि एक बड़ी लहर असंख्य छोटी-छोटी लहरों से बनी है। और यद्यपि प्रत्येक छोटी लहर अपना शब्द करती है, परन्तु फिर भी वह हमें सुनाई नहीं पड़ती। पर ज्यों ही ये सब शब्द आपस में मिलकर एक हो जाते हैं, त्यों ही हमें बड़ी आवाज सुनाई देती है। इसी प्रकार हृदय की प्रत्येक धड़कन कार्य है। कई कार्य ऐसे होते हैं, जिनका हम अनुभव करते हैं, वे हमें इन्द्रियग्राह्य हो जाते हैं, पर वे अनेक छोटे-छोटे कार्यों की समष्टि होते हैं।

(क) हृदय की प्रत्येक धड़कन को क्या कहा गया है ?

उत्तर : हृदय की प्रत्येक धड़कन को कार्य कहा गया है।

Quick Tip

यह गद्यांश दर्शाता है कि हृदय की धड़कन भी एक छोटा कार्य है, लेकिन यह एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया का हिस्सा है।

(ख) छोटे-छोटे कर्मों की समष्टि से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर : छोटे-छोटे कर्मों की समष्टि से तात्पर्य है कि अनेक छोटे कार्य मिलकर एक बड़ा कार्य या परिणाम उत्पन्न करते हैं।

Quick Tip

यह विचार हमें यह सिखाता है कि हर छोटा प्रयास बड़ा परिणाम ला सकता है, जब वे मिलकर एक साथ काम करते हैं।

(ग) 'इन्द्रियग्राह्य' और 'समष्टि' शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'इन्द्रियग्राह्य' का अर्थ है वह जो इन्द्रियों से अनुभव किया जा सके, अर्थात् जो हमें अपनी इन्द्रियों से महसूस हो। 'समष्टि' का अर्थ है अनेक छोटे-छोटे भागों का मिलकर एक बड़ा रूप बनाना।

Quick Tip

'इन्द्रियग्राह्य' और 'समष्टि' जैसे शब्दों का प्रयोग यह दर्शाने के लिए किया जाता है कि जीवन के विभिन्न पहलू हमारे अनुभव और समग्र रूप से जुड़े हुए हैं।

11.(क) निम्नलिखित शब्द-युग्मों का सही अर्थ चयन करके लिखिए :

(i) अनिष्ट-अनिष्ट

(अ) बुरा और निष्ठा रहित

(ब) दूरस्थ और अविचल

(स) अनन्त और अन्तिम

(द) अतिरिक्त और कठोर

**Correct Answer :** (अ) बुरा और निष्ठा रहित

उत्तर : 'अनिष्ट' का अर्थ बुरा और 'अनिष्ट' का अर्थ निष्ठा रहित होता है । ये दोनों शब्द किसी व्यक्ति या स्थिति के दोषपूर्ण या नकारात्मक पहलू को व्यक्त करते हैं ।

Quick Tip

'अनिष्ट' और 'अनिष्ट' दोनों शब्द किसी नकारात्मक या अपक्षिप्तता को व्यक्त करते हैं, जो किसी व्यक्ति, कार्य या स्थिति से संबंधित हो सकती है ।

**(ii) मात्र मातृ**

(अ) मंत्र और मान्य

(ब) केवल और माता

(स) मलिन और मृदु

(द) मैत्री और मुग्ध

**Correct Answer :** (ब) केवल और माता

उत्तर : 'मात्र' का अर्थ है केवल और 'मातृ' का अर्थ है माता । इस प्रकार 'मात्र मातृ' का अर्थ होता है केवल माता ।

Quick Tip

'मात्र' और 'मातृ' शब्द एक विशिष्टता को व्यक्त करते हैं, जहां 'मात्र' किसी चीज़ की सीमितता को व्यक्त करता है और 'मातृ' मातृत्व या माता के संदर्भ में होता है ।

**(ख) निम्नलिखित शब्दों में से किसी एक शब्द के दो अर्थ लिखिए : (i) तात**

उत्तर : 'तात' शब्द के दो अर्थ हैं : 1. पिता (माता-पिता में से कोई एक) 2. प्रिय (किसी प्रिय व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है)

Quick Tip

'तात' शब्द का प्रयोग संबोधन या आदरभाव के साथ किसी प्रिय व्यक्ति या पिता के संदर्भ में किया जाता है ।

**(ii) सुरभि**

उत्तर : 'सुरभि' शब्द के दो अर्थ हैं : 1. सुगंध (जो खुशबूदार होती है) 2. गौ (धार्मिक संदर्भ में 'सुरभि' को गाय के रूप में भी प्रयोग किया जाता है)

Quick Tip

'सुरभि' शब्द का उपयोग खुशबू और गौ के संदर्भ में किया जाता है। यह शब्द सामान्यतः सुंदर और सुखद गंध के लिए प्रयोग होता है।

(iii) शिखा

उत्तर: 'शिखा' शब्द के दो अर्थ हैं: 1. शिखर (सिर या ऊँचाई का शीर्ष भाग) 2. जटाओं का भाग (विशेष रूप से किसी योगी या तपस्वी के सिर के ऊपर स्थित बालों की छोटी गाँठ)

Quick Tip

'शिखा' शब्द का प्रयोग सिर के शीर्ष या धार्मिक संदर्भों में किया जाता है, जैसे तपस्वियों के बालों की गाँठ में।

(iv) मधु

उत्तर: 'मधु' शब्द के दो अर्थ हैं: 1. शहद (सुरभित, मीठा पदार्थ) 2. सौंदर्य (जो मधुर या सुखद हो)

Quick Tip

'मधु' शब्द का उपयोग शहद या मीठे पदार्थ के संदर्भ में किया जाता है, और इसे आमतौर पर किसी अन्य चीज़ के सुंदर और मीठे गुणों को व्यक्त करने के लिए भी उपयोग किया जाता है।

(ग) निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द का चयन करके लिखिए :

(i) जो कम बोलता हो

(अ) असंवादी

(ब) मितभाषी

(स) बातूनी

(द) विवादी

**Correct Answer :** (ब) मितभाषी

उत्तर: जो कम बोलता हो, उसे 'मितभाषी' कहा जाता है। 'मितभाषी' का अर्थ है वह व्यक्ति जो आवश्यकता अनुसार या कम शब्दों में बोलता है।

Quick Tip

'मितभाषी' शब्द का प्रयोग ऐसे व्यक्तियों के लिए किया जाता है जो कम बोलते हैं, और उनके शब्दों में संतुलन होता है।

(ii) जो बूढ़ा न हो

- (अ) अमर  
(ब) अजर  
(स) अनन्त  
(द) अनश्वर

**Correct Answer :** (ब) अजर

उत्तर : जो बूढ़ा न हो, उसे 'अजर' कहा जाता है। 'अजर' का अर्थ है वह जो कभी बूढ़ा न हो, अर्थात् जो शारीरिक रूप से कभी वृद्ध न हो।

Quick Tip

'अजर' शब्द का प्रयोग ऐसे व्यक्तियों या चीजों के लिए किया जाता है जो उम्र के प्रभाव से बची रहती हैं, जैसे देवता या अमरता का प्रतीक।

(घ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :

(i) मैं अनेकों बार दिल्ली जा चुका हूँ।

शुद्ध वाक्य : मैं कई बार दिल्ली जा चुका हूँ।

Quick Tip

'अनेकों' शब्द का प्रयोग सामान्यतः गलत होता है। 'कई' शब्द का प्रयोग अधिक उचित है।

(ii) सीता ने पुस्तक लिखा।

शुद्ध वाक्य : सीता ने पुस्तक लिखी।

Quick Tip

'लिखा' शब्द पुल्लिंग के लिए है, जबकि 'पुस्तक' स्त्रीलिंग है, इसलिए सही रूप 'लिखी' होगा।

(iii) गमला मेज में रखा है।

शुद्ध वाक्य : गमला मेज पर रखा है।

Quick Tip

'में' का प्रयोग स्थानिक संदर्भ में किया जाता है, जबकि 'पर' का प्रयोग किसी वस्तु के ऊपर स्थित होने के संदर्भ में किया जाता है।

(iv) मैं महेश को पढ़ाया हूँ ।

शुद्ध वाक्य : मैंने महेश को पढ़ाया है ।

Quick Tip

'पढ़ाया हूँ' की बजाय 'पढ़ाया है' होना चाहिए, क्योंकि 'मैं' के साथ 'ने' का प्रयोग करना आवश्यक है ।

12.(क) 'करुण रस' अथवा 'शान्त रस' का स्थायी भाव के साथ उदाहरण अथवा परिभाषा लिखिए

उत्तर : करुण रस का स्थायी भाव 'शोक' होता है, जो दुख और पीड़ा के कारण उत्पन्न होता है । यह रस तब उत्पन्न होता है जब किसी व्यक्ति या पात्र की दीन-हीन स्थिति, असमर्थता या दुखद परिस्थिति दर्शाई जाती है ।

उदाहरण : राम का वनवास और सीता का अपहरण करुण रस के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जिसमें राम और सीता की स्थिति दर्शाकर शोक उत्पन्न होता है ।

शान्त रस का स्थायी भाव 'शांति' होता है, जो मानसिक संतुलन, निरवेद और धैर्य से जुड़ा होता है । यह रस तब उत्पन्न होता है जब किसी स्थिति को शांतिपूर्वक स्वीकार किया जाता है और दुखों के बीच भी शांति बनी रहती है ।

उदाहरण : भगवान् श्रीराम का वनवास के समय शांति से जीवन बिताना शान्त रस का एक अच्छा उदाहरण है ।

Quick Tip

'करुण रस' शोक से जुड़ा होता है, जबकि 'शान्त रस' मानसिक शांति और संतुलन को दर्शाता है ।

(ख) 'अनुप्रास' अथवा 'उत्प्रेक्षा' अलङ्कार का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए

उत्तर : अनुप्रास अलंकार तब होता है जब किसी कविता या गद्य में किसी विशेष ध्वनि या वर्ण का पुनरावृत्ति होती है । इसमें शब्दों के पहले या अंत में समान ध्वनियों का प्रयोग होता है, जिससे संगीतात्मकता और माधुर्यता उत्पन्न होती है ।

लक्षण : 'अनुप्रास' में दो या दो से अधिक शब्दों में समान ध्वनियां या स्वर होते हैं ।

उदाहरण : "नदी में नौका, नाव में नायक" - यहाँ 'न' ध्वनि की पुनरावृत्ति हुई है ।

उत्प्रेक्षा अलंकार तब होता है जब किसी वस्तु या परिस्थिति के माध्यम से कोई अन्य अर्थ या भाव व्यक्त किया जाता है । यह अप्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य विचार या विचारधारा को प्रकट करता है ।

लक्षण : उत्प्रेक्षा में किसी वस्तु या घटना के द्वारा अन्य अर्थ की ओर संकेत किया जाता है ।

उदाहरण : "चाँद को देखा तो प्रिय की याद आई" - यहाँ चाँद के माध्यम से प्रिय की याद का भाव व्यक्त हो रहा है ।

Quick Tip

'अनुप्रास' में ध्वनियों की पुनरावृत्ति होती है, जबकि 'उत्प्रेक्षा' अप्रत्यक्ष अर्थ व्यक्त करती है ।

(ग) 'चौपाई' अथवा 'दोहा' छन्द का लक्षण तथा उदाहरण लिखिए

उत्तर : चौपाई छंद एक प्रसिद्ध छंद है जो हिंदी साहित्य में विशेष रूप से रामचरितमानस और अन्य महाकाव्य काव्य रचनाओं में प्रयोग किया जाता है ।

लक्षण : - चौपाई में चार पंक्तियाँ होती हैं । - प्रत्येक पंक्ति में 16 या 20 वर्ण होते हैं, जो समान या विभक्त होते हैं । - चौपाई का विशेष रूप से दोहे से लंबा रूप होता है ।

उदाहरण : रामचरितमानस से एक चौपाई : "श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन, हरणं भगतिविशोक । रघुकुल नायक महाराज, भगतिवृद्धि दायक ।"

दोहा छंद एक छोटी और बहुत ही प्रभावी छंद विधि है, जो हिंदी कविता में प्रसिद्ध है ।

लक्षण : - दोहा में दो पंक्तियाँ होती हैं । - प्रत्येक पंक्ति में 13 और 11 वर्ण होते हैं । - यह विशेष रूप से गीत, भजन, और छोटी कविताओं में उपयोग किया जाता है ।

उदाहरण : "सवा लाख से एक लड़ा, राम के साथ सियाराम । धरती और आकाश में, चमक रहा नक्षत्र ।"

#### Quick Tip

'चौपाई' में 4 पंक्तियाँ होती हैं, जबकि 'दोहा' में 2 पंक्तियाँ होती हैं, और प्रत्येक में विशेष वर्ण संख्या होती है ।

(13) बैंक प्रबन्धक को शिक्षा ऋण के आवेदन के सम्बन्ध में पत्र लिखिए ।

उत्तर :

प्रिय महोदय,

सन्दर्भ : शिक्षा ऋण के लिए आवेदन ।

सादर निवेदन है कि मैं [आपका नाम], [आपकी स्कूल/कॉलेज का नाम], [कोर्स/विभाग का नाम] का विद्यार्थी हूँ । मुझे अपनी उच्च शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता की आवश्यकता है । इसलिए, मैं आपके बैंक से शिक्षा ऋण प्राप्त करने के लिए आवेदन कर रहा हूँ ।

कृपया मुझे शिक्षा ऋण प्रदान करने की कृपा करें, ताकि मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ । मेरी वित्तीय स्थिति को ध्यान में रखते हुए ऋण की राशि और ब्याज दर को उपयुक्त रूप से निर्धारित किया जाए, यह निवेदन है ।

मैंने सभी आवश्यक दस्तावेज़ जैसे कि प्रवेश प्रमाणपत्र, पाठ्यक्रम विवरण, फीस संरचना आदि संलग्न कर दिए हैं । कृपया मेरी ऋण आवेदन प्रक्रिया को शीघ्र स्वीकार करें और मुझे आवश्यक सहायता प्रदान करें ।

धन्यवाद ।

आपका विश्वासी,

[आपका नाम]

[आपका पता]

[तारीख]

#### Quick Tip

शिक्षा ऋण के आवेदन में सभी आवश्यक दस्तावेज़ों को संलग्न करना बहुत महत्वपूर्ण है, ताकि प्रक्रिया में कोई अड़चन न आए ।

## अथवा

किसी पर्यटन स्थल की यात्रा का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए ।

उत्तर : प्रिय मित्र,

सादर नमस्कार,

मुझे आशा है कि तुम स्वस्थ और खुशहाल रहोगे । मैं तुम्हें हाल ही में की गई मेरी यात्रा के बारे में बताना चाहता हूँ, जो मैंने [पर्यटन स्थल का नाम] पर की थी । यह स्थान बहुत ही आकर्षक और शांति देने वाला था ।

हम वहाँ [यात्रा की तिथि] गए थे । [पर्यटन स्थल का नाम] का प्राकृतिक सौंदर्य अतुलनीय था । वहाँ के पहाड़, झील, और हरे-भरे बाग-बगिचों ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया । हमने वहाँ के प्रसिद्ध मंदिरों और ऐतिहासिक स्थलों का दौरा किया । वहाँ के लोग भी बहुत ही मेहमाननवाज और सहयोगी थे ।

इस यात्रा में हमें बहुत सारी यादें मिलीं, और मैंने वहाँ के कुछ अद्भुत दृश्य अपने कैमरे में कैद किए । वहाँ के स्वादिष्ट भोजन का भी मैं कभी नहीं भूल सकता ।

आशा है तुम भी जल्द ही ऐसी किसी यात्रा पर जाओगे । तुम्हारी यात्रा का विवरण सुनने का इंतजार रहेगा ।

शुभकामनाओं के साथ,

[आपका नाम]

[तारीख]

### Quick Tip

पर्यटन स्थल की यात्रा करते समय कैमरा जरूर साथ रखें, ताकि आप अपनी यात्रा के यादगार क्षणों को कैद कर सकें ।

## 14. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर अपनी भाषा शैली में निबन्ध लिखिए :

(क) पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व

उत्तर :

**प्रस्तावना :** पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है, और इसका संरक्षण हमारी जिम्मेदारी है । आज के समय में प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और वन्यजीवों की प्रजातियों का विलुप्त होना, यह सब पर्यावरण के संकट को दर्शाता है । मानव ने अपने विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया है, जिसके कारण पर्यावरणीय असंतुलन उत्पन्न हुआ है । यदि इस असंतुलन को तुरंत नहीं रोका गया, तो इसके परिणाम बहुत ही विनाशकारी हो सकते हैं ।

**पर्यावरण संरक्षण के महत्त्व :** पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व इस बात से समझा जा सकता है कि हमारे जीवन के हर पहलू में पर्यावरण का प्रभाव है । हमें हवा, पानी, और भोजन के लिए प्राकृतिक संसाधनों की आवश्यकता है, जो केवल एक स्वस्थ पर्यावरण से ही मिल सकते हैं । यदि प्रदूषण और संसाधनों का दोहन इसी गति से चलता रहा, तो आने वाले समय में जीवन का अस्तित्व संकट में पड़ जाएगा । इस प्रकार, पर्यावरण की सुरक्षा से ही समाज की भलाई और विकास संभव है ।

**पर्यावरण संरक्षण के उपाय :**

- **वृक्षारोपण :** वृक्षों का महत्त्व हमारे जीवन में अत्यधिक है । वृक्ष हमें आक्सीजन प्रदान करते हैं और वायुमंडलीय कार्बन डाईऑक्साइड को अवशोषित करते हैं । साथ ही वृक्षों से वर्षा में वृद्धि होती है और यह प्रदूषण को भी नियंत्रित करता है ।

- **जल संरक्षण :** जल संकट एक वैश्विक समस्या बन चुका है। वर्षा जल संचयन, जल पुनर्चक्रण और जल के बचत उपायों को अपनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। लोगों को जल का महत्व समझाकर इसका उपयोग विवेकपूर्ण तरीके से करना चाहिए।
- **प्रदूषण नियंत्रण :** प्लास्टिक का कम उपयोग, कूड़े का सही निस्तारण और प्रदूषण को कम करने के उपायों को अपनाना पर्यावरण संरक्षण में सहायक हो सकता है। साथ ही वाहनों से निकलने वाले प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए सार्वजनिक परिवहन का प्रयोग बढ़ाना चाहिए।
- **संपत्ति और संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग :** प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग सावधानी से और जितनी आवश्यकता हो उतना ही करना चाहिए। यह संसाधनों की सुरक्षा के लिए आवश्यक है।
- **सरकारी और नागरिकों की भूमिका :** सरकारी योजनाओं का सही क्रियान्वयन और नागरिकों की जागरूकता दोनों मिलकर पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

**निष्कर्ष :** पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें अपनी जीवनशैली में बदलाव लाने होंगे। केवल सरकारी प्रयासों से यह समस्या हल नहीं हो सकती, इसके लिए नागरिकों का भी सक्रिय योगदान आवश्यक है। हमें प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग सहेज कर करना चाहिए और प्रदूषण को कम करने के लिए कदम उठाने चाहिए। जब तक हम अपने प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा नहीं करेंगे, तब तक हम आने वाली पीढ़ियों को एक स्वस्थ वातावरण नहीं दे सकेंगे। हम जितनी जल्दी इस दिशा में कदम उठाएंगे, उतना ही बेहतर परिणाम मिलेगा।

#### Quick Tip

बेरोजगारी को समाप्त करने के लिए शिक्षा प्रणाली में सुधार, स्वरोजगार को बढ़ावा और औद्योगिक विकास आवश्यक है।

### (ख) विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्त्व

**उत्तर :**

**प्रस्तावना :** विद्यार्थी जीवन वह समय होता है जब एक व्यक्ति अपने जीवन की नींव रखता है। यह समय संकल्प, कठिनाई और ज्ञान प्राप्ति का है। यदि विद्यार्थी जीवन में अनुशासन न हो, तो किसी भी उद्देश्य को प्राप्त करना मुश्किल हो जाता है। अनुशासन न केवल शिक्षा के क्षेत्र में बल्कि जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता पाने का एक महत्वपूर्ण तत्व है। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का पालन करने से ही जीवन में स्थिरता, सफलता और उद्देश्य की प्राप्ति हो सकती है। यह जीवन की प्राथमिकताओं को समझने और उन्हीं पर ध्यान केंद्रित करने की प्रक्रिया है।

**अनुशासन का महत्त्व :** अनुशासन से विद्यार्थी अपने समय का सही उपयोग कर सकते हैं। यह उन्हें अपने कार्यों के प्रति जिम्मेदारी का अहसास कराता है और उनका ध्यान स्थिर रखता है। अनुशासन से व्यक्ति अपने लक्ष्यों के प्रति समर्पित रहता है और किसी भी काम को आलस्य या लापरवाही से नहीं छोड़ता। अनुशासन से मानसिक संतुलन भी बनाए रखने में मदद मिलती है, जिससे किसी भी कार्य को अधिक कठिनाई के बिना आसानी से पूरा किया जा सकता है। इसके माध्यम से विद्यार्थी अपने जीवन में सही दिशा और प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

**विद्यार्थी जीवन में अनुशासन के लाभ :**

- **समय प्रबंधन :** अनुशासन से विद्यार्थी समय का सही उपयोग करते हैं, जिससे वे अपनी पढ़ाई, खेल, और अन्य गतिविधियों में संतुलन बनाए रखते हैं। समय का सही प्रबंधन विद्यार्थी को जीवन में सफलता की दिशा में अग्रसर करता है।

- **मानसिक शांति :** अनुशासन से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अपने कार्यों को बिना किसी तनाव के पूरा कर पाते हैं। यह मानसिक शांति और संतुलन बनाए रखने में मदद करता है, जिससे वे अपने कार्यों में अधिक प्रभावी होते हैं।
- **सफलता की प्राप्ति :** अनुशासन के कारण विद्यार्थी अपने उद्देश्यों को हासिल करने के लिए लगातार प्रयास करते हैं, जो उन्हें सफलता की ओर अग्रसर करता है। यह उन्हें आत्मविश्वास और निरंतरता से सफलता दिलाने में मदद करता है।
- **समस्याओं का समाधान :** अनुशासन से विद्यार्थी किसी भी कठिनाई का सामना बेहतर तरीके से कर पाते हैं, क्योंकि यह उन्हें अपनी समस्याओं का समाधान सोच-समझकर और सही दिशा में करने की शक्ति देता है। वे अपने लक्ष्यों के प्रति निष्ठा से प्रयास करते हैं, और किसी भी प्रकार की विफलता उन्हें निराश नहीं करती।

**निष्कर्ष :** विद्यार्थी जीवन में अनुशासन एक ऐसा आधार है, जो विद्यार्थियों को जीवन में सफलता दिलाने के लिए आवश्यक है। यह न केवल पढ़ाई में, बल्कि जीवन के हर पहलू में सफलता का रास्ता दिखाता है। एक अनुशासित विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होता है और यह आदत जीवन भर उनके साथ रहती है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अनुशासन को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं और अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए इसे पूरी निष्ठा से अपनाएं। अनुशासन के साथ, सफलता को प्राप्त करने का रास्ता सुलभ और अधिक प्रभावी हो जाता है।

#### Quick Tip

अनुशासन केवल समय की पाबंदी नहीं है, बल्कि यह जीवन में किसी भी कार्य को ठानकर और समर्पण से करने का तरीका है। यह आपको आपके जीवन के लक्ष्यों तक पहुंचने में मदद करता है।

### (ग) वर्तमान समय में नारी शिक्षा

उत्तर :

**प्रस्तावना :** वर्तमान समय में नारी शिक्षा का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण उपकरण बन चुकी है। पहले जहां महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, वहीं अब यह स्थिति धीरे-धीरे बदल रही है। महिलाएं अब हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं और अपनी पहचान बना रही हैं। नारी शिक्षा समाज के समग्र विकास के लिए अनिवार्य है।

**नारी शिक्षा के लाभ :**

- **समानता की प्राप्ति :** नारी शिक्षा से महिलाओं को समान अधिकार और अवसर मिलते हैं। इससे समाज में लिंग आधारित भेदभाव को समाप्त किया जा सकता है।
- **स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता :** शिक्षा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाती है, जिससे वे किसी पर निर्भर नहीं रहतीं। अपने जीवन के निर्णय वे खुद ले सकती हैं।
- **समाज में सकारात्मक बदलाव :** जब महिलाएं शिक्षित होती हैं, तो वे न केवल अपने परिवार की स्थिति सुधारने में मदद करती हैं, बल्कि पूरे समाज में सकारात्मक बदलाव लाती हैं।
- **आर्थिक विकास :** महिलाएं जब आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती हैं, तो वे समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। शिक्षा महिलाओं को रोजगार और व्यवसाय के अवसर प्रदान करती है।

## वर्तमान समय में नारी शिक्षा में चुनौतियाँ :

- सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ : कुछ क्षेत्रों में महिलाएं अभी भी शिक्षा से वंचित रहती हैं। समाज में कुछ सांस्कृतिक मान्यताएँ महिलाओं की शिक्षा के विरोध में हैं।
- आर्थिक स्थिति : महिलाओं की शिक्षा के लिए परिवारों के पास पर्याप्त संसाधन नहीं होते हैं। खासकर ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में यह समस्या अधिक गंभीर है।
- संवेदनशीलता की कमी : कई बार लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता नहीं दी जाती है और उनकी शिक्षा को माता-पिता द्वारा नजरअंदाज कर दिया जाता है।

## नारी शिक्षा के लिए उपाय :

- साक्षरता अभियान : सरकार को महिलाओं के साक्षरता अभियान को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि ग्रामीण इलाकों में भी शिक्षा की रोशनी पहुंचे।
- आर्थिक सहायता : महिलाओं के शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करना, ताकि आर्थिक स्थिति के कारण वे शिक्षा से वंचित न रहें।
- समाजिक जागरूकता : समाज में नारी शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देना चाहिए और परिवारों को यह समझाना चाहिए कि महिलाओं को शिक्षा देना समाज के हित में है।

**निष्कर्ष :** नारी शिक्षा से समाज में समानता, स्वतंत्रता और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। यह न केवल महिलाओं के जीवन को सशक्त बनाती है, बल्कि समाज और राष्ट्र के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। हमें नारी शिक्षा के लिए और अधिक प्रयास करने होंगे ताकि महिलाएं अपने सपनों को साकार कर सकें और समाज में अपनी पहचान बना सकें।

### Quick Tip

नारी शिक्षा न केवल महिलाओं के लिए, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र के लिए एक महत्वपूर्ण निवेश है। इससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन आते हैं।

## (घ) साहित्य और समाज का सम्बन्ध

### उत्तर :

**प्रस्तावना :** साहित्य और समाज का गहरा और अटूट संबंध है। साहित्य एक प्रतिबिंब की तरह समाज के हर पहलू को दर्शाता है और समाज की समृद्धि और विकृति दोनों को उजागर करता है। साहित्य समाज के विचारों, आदर्शों, और मूल्य प्रणाली को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। यह समाज में बदलाव लाने, जागरूकता फैलाने और जनमानस को प्रेरित करने का काम करता है।

**साहित्य और समाज के बीच संबंध :** साहित्य और समाज का संबंध परस्पर संवादात्मक है। साहित्य समाज की घटनाओं, संघर्षों, और विकास को रिकॉर्ड करता है, जबकि समाज भी साहित्य को प्रेरित करता है। जब समाज में किसी परिवर्तन की आवश्यकता होती है, तो साहित्यकार अपनी लेखनी से उस बदलाव की आवश्यकता को उजागर करते हैं। साहित्य समाज के भीतर चल रही सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों को व्यक्त करता है।

### साहित्य के समाज पर प्रभाव :

- सामाजिक जागरूकता : साहित्य समाज के भीतर जागरूकता फैलाने का एक शक्तिशाली साधन है। समाज में व्याप्त बुराइयों, असमानताओं और अनाचार को उजागर करने के लिए साहित्य का सहारा लिया जाता है।

- **सामाजिक परिवर्तन :** साहित्य समाज में बदलाव लाने के लिए प्रेरित करता है । कई बार साहित्य ने समाज में परिवर्तन की बुनियादी नींव रखी है, जैसे नारी अधिकारों के लिए आंदोलन, भ्रष्टाचार के खिलाफ लेखन, और समानता के पक्ष में काम ।
- **संस्कृति की अभिव्यक्ति :** साहित्य संस्कृति, परंपराओं और धार्मिक विश्वासों की अभिव्यक्ति करता है । यह समाज के इतिहास, भाषा, और सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करता है ।
- **मानवीय संवेदनाओं का चित्रण :** साहित्य मानवीय भावनाओं जैसे प्रेम, दर्द, संघर्ष, और विजय को व्यक्त करता है । यह समाज में गहरे मानवीय संबंधों और कठिनाइयों को उजागर करता है ।

**समाज का साहित्य पर प्रभाव :** साहित्य समाज से प्रभावित होता है । सामाजिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक घटनाएँ साहित्य को प्रेरित करती हैं । जब समाज में किसी तरह का संकट आता है या जब कोई नया आंदोलन खड़ा होता है, तो साहित्यकार उसी की प्रतिक्रिया में अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करते हैं । समाज के विचार, धारा और उथल-पुथल साहित्य में दिखाई देती हैं ।

**निष्कर्ष :** साहित्य और समाज का संबंध बहुत महत्वपूर्ण और अविभाज्य है । साहित्य समाज का दर्पण है और समाज साहित्य को अपनी विचारधारा और आवश्यकताओं से प्रभावित करता है । साहित्य समाज की न केवल आलोचना करता है, बल्कि उसे एक सकारात्मक दिशा भी प्रदान करता है । साहित्य के माध्यम से हम समाज की समस्याओं और उनके समाधान को समझ सकते हैं और सुधारात्मक कदम उठा सकते हैं । साहित्य और समाज का यह रिश्ता हमेशा गतिशील और विकासशील रहता है ।

#### Quick Tip

साहित्य समाज का दर्पण होता है, जो उसकी स्थितियों, समस्याओं और बदलावों को दर्शाता है । साहित्य के माध्यम से हम सामाजिक सुधार के दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं ।

### (ड) राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020

**उत्तर :**

**प्रस्तावना :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP 2020) भारत सरकार द्वारा पेश की गई एक नई शिक्षा नीति है, जिसका उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार और प्रगति लाना है । यह नीति विद्यार्थियों को गुणवत्ता शिक्षा, समग्र विकास, और रोजगार योग्य कौशल प्राप्त करने के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है । NEP 2020 का लक्ष्य भारत को एक ज्ञान आधारित समाज और राष्ट्र बनाना है, जो वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ सके ।

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रमुख उद्देश्य :**

- **कृषि और उद्योग के साथ शिक्षा का संबंध :** NEP 2020 में कृषि और उद्योगों से जुड़े पाठ्यक्रमों को बढ़ावा देने की बात की गई है, ताकि छात्रों को रोजगार योग्य कौशल मिल सके ।
- **मल्टीडिसिप्लिनरी शिक्षा :** इस नीति के तहत एक ही समय में कई विषयों का अध्ययन करने की स्वतंत्रता दी गई है, जिससे छात्र अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं ।
- **प्रौद्योगिकी का समावेश :** NEP 2020 में प्रौद्योगिकी को शिक्षा के केंद्र में रखा गया है । डिजिटल शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा उपलब्ध कराई जाएगी ।
- **बहुभाषीय शिक्षा :** NEP 2020 भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित करती है और विद्यार्थियों को मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने की सलाह देती है, ताकि वे अपने सांस्कृतिक और भाषाई धरोहर से जुड़े रह सकें ।

- स्वतंत्रता और पाठ्यक्रम में लचीलापन : छात्रों को अपने पाठ्यक्रम में स्वतंत्रता दी जाएगी, जिससे वे अपनी रुचियों और कौशल के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर सकें ।

#### NEP 2020 के प्रमुख सुधार :

- आधुनिकता और नवीनता : NEP 2020 में शिक्षा में तकनीकी बदलाव और आधुनिक दृष्टिकोण को शामिल किया गया है, ताकि छात्रों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाया जा सके ।
- हायर एजुकेशन और रिसर्च : उच्च शिक्षा संस्थानों में शोध और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए नए तरीके और वित्तीय सहायता दी जाएगी ।
- शिक्षकों की भूमिका में सुधार : शिक्षकों की भूमिका को नए सिरे से परिभाषित किया गया है, ताकि वे छात्रों को एक बेहतर और समृद्ध शिक्षा प्रदान कर सकें ।

**नीति के प्रभाव :** NEP 2020 का उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाना है । यह नीति विद्यार्थियों को रोजगार की दिशा में सक्षम बनाएगी और समग्र विकास में सहायक होगी । इसके साथ ही, भारत में शिक्षा के क्षेत्र में सुधार और डिजिटल शिक्षा का विस्तार होगा । इस नीति के कार्यान्वयन से भारतीय शिक्षा प्रणाली में सकारात्मक बदलाव आएगा और यह युवा पीढ़ी को बेहतर अवसर प्रदान करेगा ।

**निष्कर्ष :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है । इस नीति का उद्देश्य शिक्षा को अधिक सुलभ, समावेशी और गुणवत्तापूर्ण बनाना है । यह नीति भारत को एक उच्च शिक्षा केंद्र और विश्वस्तरीय कौशल प्राप्त राष्ट्र बनाने की दिशा में एक नई शुरुआत है । इसके प्रभावी क्रियान्वयन से भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार और समृद्धि की नई राह खुलेगी ।

#### Quick Tip

NEP 2020 शिक्षा में समग्र सुधार का एक व्यापक प्रयास है, जो भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी और सशक्त बनाएगा ।